www.thearyasamaj.org


।। ओ३म् ।।

# आर्यावर्त केसरी

विश्व भर में भारतीय संस्कृति का प्रबल उद्घोषक पाक्षिक

वार्षिक शुल्क : 100/-
आजीवन : 1100/-
(विदेश में) 5 वर्ष के 35 डॉलर

आर.एन.आई.सं.
UP HIN/2002/7589
पोस्टल रजि. सं.
U.P./MBD-64/2011-13
दयानन्दाब्द १८६,
शक सं. १८३४,
सृष्टि सं.- १६६०८५३११३

वर्ष-12 | अंक-16 | मार्ग शीर्ष शु. १४ से पौष कृ १४ सं. २०७० वि. | 16 से 31 दिसम्बर 2013 | अमरोहा, उ.प्र. | पृ. 12 | प्रति-5/-

दक्षिण अफ्रीका में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में उपस्थित भारत के आर्य नेता व श्रद्धालु महानुभाव- केसरी।

**टंकारा चलो**

**ऋषि जन्मभूमि टंकारा (गुजरात) में होगा भव्य**

**ऋषि बोधोत्सव**

**25 से 27 फरवरी 2014**

कृपया सहभागिता का कार्यक्रम बनाएं। अपने आगमन की सूचना दें।
-रामनाथ सहगल, मंत्री

नोट- आर्य उपप्रतिनिधि सभा, अमरोहा द्वारा आयोजित टंकारा यात्रा का विवरण पृ.-७ पर देखें

# डरबन में हुआ अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

## ❑ ऐतिहासिक शोभायात्रा ने मनमोहा ❑ वैदिक उद्घोषों से गूंज उठा गगन

**डरबन (द. अफ्रीका) से अर्जुन देव चड्ढा की रिपोर्ट**

आर्यसमाज ही विश्व कल्याण का सूत्रधार है। विश्व की विभिन्न समस्याओं का समाधान आर्यसमाज के रास्ते से ही सम्भव हो सकता है। वास्तव में यदि हम अपना तथा संसार का कल्याण करना चाहते हैं तो आर्यसमाज के सानिध्य में आना ही होगा। ये विचार यहां साउथ अफ्रीका में 28 नवम्बर से 01 दिसम्बर तक धूमधाम से सम्पन्न हुए अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में विद्वानों ने व्यक्त किये।

महासम्मेलन में भारतीय प्रतिनिधि मण्डल में सम्मिलित आर्य नेता व सदस्यगण- केसरी।

डरबन महानगर के सिटी हॉल के भव्य सभागार में 28 नवम्बर को स्वामी अग्निवेश, आचार्य बल्देव, डॉ. उषा देसाई व डॉ. राम बिलास ने दीप प्रज्ज्वलन एवं प्रार्थना मंत्रों के साथ समारोह का भव्य शुभारंभ किया।

पहले दिन चार सत्रों में कार्यक्रम हुआ। विश्व वेद सम्मेलन के अन्तर्गत विद्वानों, सन्यासियों व विशेषज्ञों के प्रवचन हुये, जिनमें आर्यसमाज का विश्वव्यापी प्रभाव, वेद मंत्रों की व्याख्या, हिन्दू एकता तथा वैदिक जीवन पद्धति आदि अनेक महत्वपूर्ण विषयों पर मंथन हुआ।

अगल दिन 30 नवम्बर को दोपहर 2 बजे डरबन के उपनगर फीनिक्स में भव्य तथा विशाल शोभायात्रा का आयोजन किया गया, जिसका उद्देश्य महिला एवं बाल उत्पीड़न के विरोध में आवाज उठाना था। यह शोभायात्रा फीनिक्स के रायडाल्वेल ग्राउण्ड्स से प्रारंभ हुई। आचार्य बलदेव के नेतृत्व में शोभायात्रा में सबसे आगे सन्यासी वृन्द, साउथ अफ्रीका आर्य समाज की प्रधान ऊषा बेन पटेल, संयोजक डॉ. राम विलास व अन्य आर्यजन चल रहे थे, उनके पीछे आर्यसमाज के राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पदाधिकारी व सम्मेलन में भाग लेने आए भारतीय व अन्य देशों के प्रतिभागी हाथों में नारे लिखी हुई तख्तियां लेकर चल रहे थे। शोभायात्रा में कोटा के अर्जुनदेव चड्ढा भी हैंड माइक से 'महिलाओं और बच्चों का उत्पीड़न बंद हो, बलात्कार बंद हों, नशा छोड़ो-जीवन मोड़ो, वैदिक धर्म की जय, आर्यसमाज अमर रहे' आदि नारों का गगनभेदी घोष करा रहे थे। शोभायात्रा में विभिन्न देशों से पधारे व स्थानीय आर्यसमाजी तथा नागरिक हजारों की संख्या में उपस्थित होकर नारे लगाते हुये चल रहे थे। पूरे फोनिक्स क्षेत्र के मुख्य मार्गों पर होते हुये लगभग 5 किलोमीटर की यात्रा पूरी कर शोभायात्रा वापस रायडाल्वेल ग्राउण्ड्स पर समाप्त हुई। शोभायात्रा की सुरक्षा व्यवस्था हेलीकॉप्टर से हो रही थी तथा महिला एवं पुरुष पुलिस बल भी इसके साथ तैनात था। इस शोभायात्रा में साउथ अफ्रीका में बसे अन्य हिन्दू मतावलम्बी भी उत्साह पूर्वक सम्मिलित हुये।

महासम्मेलन में 251 कुण्डीय यज्ञ भी सम्पन्न हुआ। ब्रह्मा डॉ. रामविलास ने वेद मंत्रों की हिन्दी व अंग्रेजी में व्याख्या की। 01 दिसम्बर को कार्यक्रम का एक सत्र चिकित्सा विषय पर आधारित था। उक्त सत्र में लगभग आठ देशों से पधारे स्वास्थ्य विशेषज्ञों ने विचार व्यक्त किये।

अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन में स्वामी धर्मानन्द, डॉ. स्वामी देवव्रत, स्वामी आर्यवेश, ब्र. राज सिंह, विनय आर्य, वाचोनिधि आर्य, धर्मपाल आर्य, प्रकाश आर्य, दयानन्द शर्मा आदि सहित भारी संख्या में विभिन्न देशों के प्रतिनिधि सम्मिलित थे।

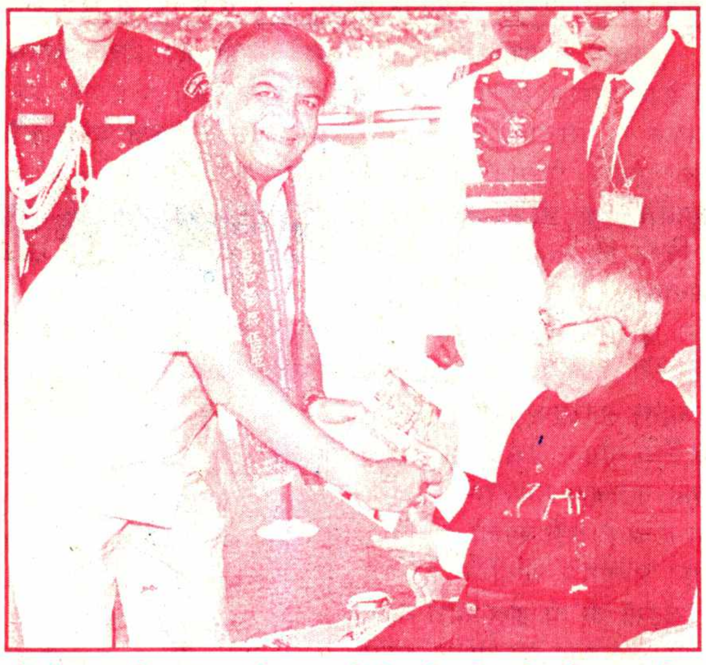

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद, नई दिल्ली की ओर से महामहिम राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी को महर्षि दयानन्द सरस्वती का चित्र एवं साहित्य भेंट करने का दृश्य -केसरी

हाथों में नारे लिखी हुई तख्तियां लिये आर्यजन- केसरी

www.thearyasamaj.org


## अर्जुन देव चड्ढा 'आर्य सेवाश्री' से अलंकृत

अर्जुन देव चड्ढा का सम्मान करते आर्यगण- केसरी।

नरदेव आर्य
रावतभाटा।

आर्यसमाज रावतभाटा के 47वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर आर्य समाज रावतभाटा तथा विभिन्न संस्थाओं के संयुक्त तत्वावधान में जिला आर्य प्रतिनिधि सभा कोटा के प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा 'आर्य सेवाश्री सम्मान' से सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर श्री चड्ढा का रेशमपाल सिंह, प्रधान, आर्यसमाज रावतभाटा ने मोतियों की माला पहनाकर स्वागत किया। पूर्व मंत्री योगेश आर्य ने शॉल ओढ़ाई तथा नरदेव आर्य ने स्मृति चिन्ह तथा प्रशस्ती-पत्र प्रदान किया। आर्य विद्वान ओमप्रकाश आर्य ने सम्मान पत्र सबके समक्ष पढ़कर सुनाया।

कार्यक्रम में जी.एस. दुबे, अग्निमित्र शास्त्री, वैदिक विद्वान विष्णु मित्र शास्त्री, संजीव आर्य, ओमप्रकाश आर्य, नरदेव आर्य आदि ने श्री चड्ढा को बधाई दी।

## बस्तियों में किया यज्ञ

पं. ईश्वर दयाल माथुर
जयपुर।

नगर के आर्य समाज जयपुर दक्षिण ने दीवारों से निकल कर साप्ताहिक सत्संग और पर्व निकवर्ती बस्तियों में करने की पहल की है। महर्षि दयानन्द निर्वाण दिसव पर न्यू सांगानेर रोड स्थित कटेवानगर-राजीव नगर, कच्ची बस्ती के हनुमान मंदिर में यज्ञ, भजन व प्रवचन के माध्यम से समारोह आयोजित हुआ। अवसर विशेष पर सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् प्रदेशाध्यक्ष यशपाल यश ने स्वामी दयानन्द को सर्वांगीण सुधारक और दलितों का मसीहा परिभाषित किया। यह समारोह स्थल सर्वहारा व दलित वर्ग के मध्य स्थित है। जहाँ आर्य समाज के दलितोद्धार कार्यक्रम का अनुकूल सन्देश गया।

बस्ती के उत्साही कार्यकर्ता भगवान् गुप्त यजमान रहे और समूची कमान बाबूलाल आर्य के हाथ रही।

इस अवसर पर सुमधुर भजनों के माध्यम से ऋषि का कृतित्व उजागर करने में रामकिशोर शर्मा, सुनील अरोड़ा, सुधा मित्तल भी पीछे नहीं रहे। समारोह के प्रधान दिनेश गुप्ता ने एकत्रित समुदाय का आभार दर्शाया।

## बांग्लादेश में हिंदुओं के घरों पर हमला

### हिंसक भीड़ ने 26 घरों में की तोड़फोड़ 150 परिवार भागे

(*अमर उजाला*- 05.11.2013 में प्रकाशित समाचार)

-: टिप्पणी :-

- उग्रवादियों/कट्टरपंथियों ने एक हिन्दू व्यापारी से मोटी रकम मांगी जिसे नहीं देने पर उस व्यापारी के पुत्र को ईश निन्दा के कानून में झूठ बोल कर फंसा दिया और लूटमार-दंगा कर दिया।
- इस घिनौनी घटना पर उच्च न्यायालय ने स्वयं संज्ञान लेकर 24 घण्टे के अन्दर दंगाईयो को पकड़ने के आदेश दिए जिसकी सराहना व प्रशंसा की जाती है।
- 9 दंगाई तो पकड़ लिए गए अन्यों की तलाश की जा रही है।
- भयभीत हिन्दुओं को पर्याप्त सुरक्षा देने के लिए भी आदेश दिए गए हैं।
- हम भी ठीक कहते हैं कि चूहों को तो सदैव बिल्लियों से डरकर छिपकर ही रहना होता है अन्यथा वे मार दिए जाते हैं।

—इन्द्रदेव गुलाटी, संचालक सावरकरवाद प्रचार सभा, 26, के.पी. रोड, बुलन्दशहर (उ.प्र.)

## वैदिक ज्ञान परीक्षा का परिणाम घोषित

वेद प्रकाश शास्त्री
फाजिलका।

वैदिक शिक्षा परिषद् फाजिलका द्वारा अक्टूबर में आयोजित वैदिक ज्ञान परीक्षा का परिणाम घोषित कर दिया गया। परीक्षा संयोजक वेद प्रकाश शास्त्री ने बताया कि यह परीक्षा प्राइमरी, मिडल, मैट्रिक, सेकण्डरी और कालेज स्तरीय पांच ग्रुपों में आयोजित की गयी। जिसमें 19 स्कूल और 4 कालेजों के 12 सौ छात्र/छात्राऐं सम्मिलित हुए। प्राईमरी ग्रुप में सर्वहितकारी विद्या मंदिर की गीतिका एवं काव्या क्रमशः प्रथम, द्वितीय तथा रेनबो डे बोर्डिंग स्कूल का रमणीक तृतीय स्थान पर रहा। मिडल ग्रुप में रेनबो डे बोर्डिंग स्कूल का बलदीप प्रथम तथा सरकारी मॉडल सी0ओ0 कौड़ियावाली की लवली द्वितीय और लविश अरोड़ा तथा मानिक तृतीय स्थान पर रहे। एस0 डी0गर्ल्स सी0से0 स्कूल की आरती तथा कुलविंदर ने भी तृतीय स्थान प्राप्त किया। मैट्रिक ग्रुप में सरकारी मॉडल सी0से0 स्कूल कौड़ियांवाली की कविता, शबीना कम्बोज एवं हिमांशी ने क्रमशः प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त किया। सेकण्डरीग्रुप में इसी स्कूल के अजय कुमार, रवीन्द्र कुमार तथा गगनदीप सिंह ने क्रमशः प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त किया।

सरकारी कन्या सी0से0 स्कूल की दो सौ से अधिक छात्राएं सम्मिलित होने के आधार पर विशेष श्रेणी के अन्तर्गत सभी ग्रुपों में अलग-अलग परिणाम घोषित किया गया।

मिडिल ग्रुप में योगिता माथुर, अंजलि तथा संदीप कौर क्रमशः प्रथम, द्वितीय, तृतीय रहीं। मैट्रिक में कर्मजीत कौर, सर्वजीत कौर तथा कोमल ने क्रमशः प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त किया। सेकण्डरी ग्रुप में पूनम रानी, अलका रानी तथा नीलम क्रमशः प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान पर रहीं। कालेज ग्रुप में ज्योति बी0एड0 कालेज फजिलका के सुशान्तधीर ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। डी0ए0वी0 कालेज आफ एजूकेशन फाजिलका के निशा तथा गौरव क्रमशः द्वितीय, तृतीय, स्थान पर रहे। डी0ए0वी0 शिक्षा महाविद्यालय अबोहर एम0एड0ग्रुप में संपना मनचन्दा, विकास कुमार, लखपत राय क्रमशः प्रथम द्वितीय तृतीय रहे। इसी कालेज के बी0एड0ग्रुप में नीतू, वीनू गोयल, ज्योति रानी ने क्रमशः प्रथम द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त किया।

गोपीचन्द आर्य महिला कालेज अबोहर के बी0ए0ग्रुप में शिखा एवं सोनाली प्रथम, प्रिया द्वितीय तथा शिवांगी, खुशबू ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। सभी 23 स्कूल, कालेजों के दो उच्चांक प्राप्त छात्र/छात्राओं को प्रोत्साहन पुरस्कार भी प्रदान किया जायेगा।

वैदिक शिक्षा परिषद् इन सभी छात्र/छात्राओं के उज्जवल भविष्य की कामना करती है। साथ ही इस परीक्षा में सहयोगी सभी स्कूल/कालेजों के प्रमुखों एवं सहयोगी शिक्षकों तथा पर्यवेक्षकों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करते हुए भविष्य में भी सहयोग की कामना करती है।

## कोटा में वैदिक सत्संगों का आयोजन

### सार्वजनिक स्थलों पर किये वैदिक सत्संग साहित्य वितरित

राजेन्द्र कुमार आर्य
कोटा।

विगत वर्षो की भांति इस बार भी 26 से 31 अक्टूबर तक आर्य समाज के भवनों से निकलकर आम जनों के मध्य सार्वजनिक स्थलों पर वैदिक सत्संगों का आयोजन किया गया। इसमें आर्य जगत के ख्याति प्राप्त विद्वान आचार्य विष्णुमित्र 'वेदार्थि' बिजनौर तथा भजनोपदेशक दिनेश दत्त आर्य- दिल्ली के प्रवचन व भजनों का आनन्द श्रोताओं को प्राप्त हुआ। प्रवक्ता राजेन्द्र आर्य ने बताया कि ये सत्संग क्रमशः मिलन गार्डन, रेलवे सोसायटी, कुन्हाड़ी, खेड़ा रसूलपुर तथा मातृ सेवासदन रामपुरा में हुए। जिससे वहां रहने वाले आर्यजनों में प्रवचन व मनोहारी भजनों के माध्यम से ऋषि का सन्देश गया तथा भाई हरी किशन द्वारा साहित्य व कैसेट लोगों तक पहुंचे।

ऋषि दयानन्द सम्बन्धी गीत 'ऋषि की कहानी सितारों से पूछो' व अन्य भजन जब दिनेश जी सुनाते थे तब श्रोता मन्त्रमुग्ध होकर कहते कि दुबारा ये कार्यक्रम कब होगा।

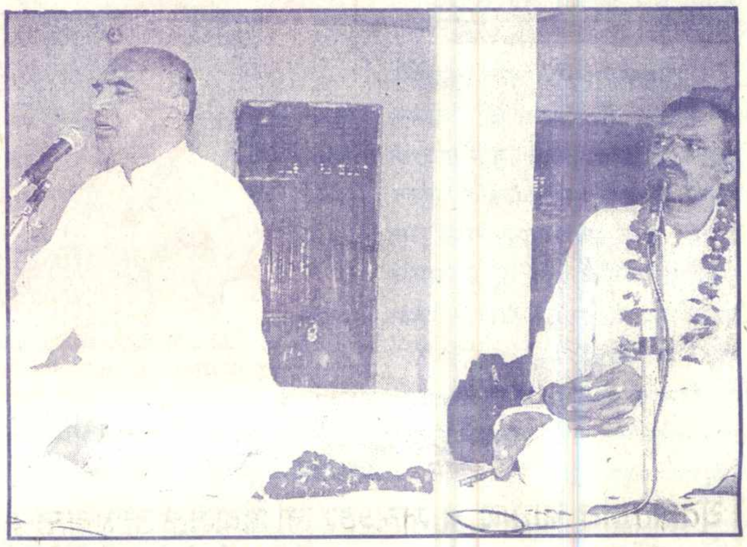

प्रवचन करते आचार्य विष्णुमित्र वेदार्थी साथ में हैं विरधी चन्द्र शास्त्री

आचार्य विषणुमित्र ने बहुत ही सरल भाषा में श्रोताओं में आर्य समाज के सिद्धान्तों को अन्दर तक उतार दिया। ऋषि के देहावसान का चित्रण आचार्य जी ने किया, कि स्वामी जी को इतना आनान्दित देख व उनके मुँह से सुन 'ईश्वर अहा तूने क्या लीला की, तेरी इच्छा पूर्ण हो।'' नास्तिक गुरुदत्त आस्तिक व आर्य समाज के लिये पागल जैसे हो गये, जैसे कभी नास्तिक मुन्शीराम हो गया था व आगे यही स्वामी श्रद्धानन्द हुए। श्रोतागण रोमांचित हो गये व कईयों के तो अश्रु धारा बहने लगी। कार्यक्रम को सफल बनाने में राजेन्द्र सक्सेना प्रेमनाथ, कौशल, इन्द्र कुमार सक्सेना, डी0पी0 मिश्रा, भेरु लाल, आर्य समाज भीमगंज मण्डी व रेलवे कॉलोनी, हनुमान आर्य आदि का विशेष सहयोग रहा तथा सभी ने प्रत्येक वर्ष में आठ-दस दिन इस प्रकार वैदिक सत्संग कराने का निश्चय किया।

इन्हीं सत्संगों के दौरान हाड़ौती के अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वैदिक विद्वान पं0 शिव नारायण उपाध्याय का रू., इक्कीस हजार की थैली व शॉल उढ़ाकर सार्वजनिक अभिनन्दन किया गया।

यज्ञ के ब्रह्मा, उपदेश, प्रवचन आदि के लिये सम्पर्क करें।
कार्यक्रम, यज्ञ आदि में भी बुलायें।
आचार्य पवनवीर
गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय, शुक्रताल, मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)
सम्पर्क सूत्र : 09639661532

# झज्जर में चरित्र निर्माण शिविरों का आयोजन चला एक माह

**सुभाष आर्य**
झज्जर (हरियाणा)

महर्षि दयानन्द शिक्षण केन्द्र में आर्य समाज एवं भारत स्वाभिमान झज्जर के संयुक्त तत्वावधान में 7–7 दिनों की अवधि के लिए बालिकाओं, बालकों, महिलाओं एवं पुरुषों के चरित्र निर्माण शिविरों का आयोजन 28 दिनों तक चला। योग शिक्षक रामनिवास, डॉ0 राजेश बंसल, सुबेदार भरत सिंह एवं महिला पतंजलि योग समिति जिला झज्जर की अध्यक्ष शर्मिला ने प्रशिक्षण प्रदान किया। आर्य समाज झज्जर के उपप्रधान महाशय रतीराम आर्य एवं महर्षि उदयानन्द शिक्षण केन्द्र झज्जर की मामकोर देवी के संयोजकत्व में प्रशिक्षण चला। प्रत्येक सात दिवसीय शिविर का समापन यज्ञ से हुआ। पारुल, आरती, कनिका, ऋषि, वर्षा, ऋति शर्मा, राधिका, निहारिका, कोमल, काजल, चींकी, ईशा, राकेश, मोहित, सचिन, एवं अंक्षांश 16 होनहार बच्चों को उनके द्वारा नमस्ते करते लेमिनेटिड चित्रों से सम्मानित किया गया। पहली कक्षा के पांच वर्षीय बालक अनमोल ने दैनिक यज्ञ के मंत्रों को कण्ठस्थ सुनाकर तथा सूर्य नमस्कार, यौगिक जोगिंग के 12 अभ्यास और लगभग 30 आसनों का शानदार प्रदर्शन से मंत्र मुग्ध कर दिया यज्ञ समिति झज्जर के प्रधान सुबेदार भरत सिंह ने यज्ञ का प्रशिक्षण दिया।

चरित्र निर्माण शिविर के प्रशिक्षक रामनिवास ने बताया सूर्य नमस्कार और यौगिक जोगिंग से सम्पूर्ण शरीर का व्यायाम हो जाता है। किशोर बच्चों के लिए ये अत्यन्त लाभकारी हैं। आसनों को पूर्ण वैज्ञानिक विधि का व्यायाम बताया। महिला शिविर में शर्मिला ने प्रतिदिन हाथों एवं पैरों के सूक्ष्म व्यायाम कराये और तनाव को समस्त रोगों का कारण बताया। महिलाओं को रामनिवास ने प्रतिदिन भस्त्रिका, कपाल भाति, बाहृय, उज्जायी, अनुलोम विलोम, भ्रामरी, उर्दगीथ और प्रणव प्राणायामों का अभ्यास दिव्य संकल्प के साथ विधिपूर्वक करवाया। एक्यूप्रेशर चिकित्सा पर प्रकाश डालते हुए बताया पैरों, हाथों, चेहरे तथा शरीर के कुछ खास केन्द्रों पर दबाव डालकर रोगों को दूर किया जाता है। पुरुषों एवं युवकों के योग विज्ञान शिविर के प्रशिक्षक रहे डॉ0 राजेश बंसल ने युवाओं को 12 प्रकार के दण्ड एवं 8 प्रकार की बैठकों का भी विधि पूर्वक अभ्यास करवाया। आपने बताया युवाओं की मासपेशियां दण्ड–बैठक से सुदृढ़ बनती हैं। गौदुग्ध, घी, बादाम आदि पुष्टिकारक पदार्थो का पर्याप्त मात्रा में सेवन करने वाले युवाओं को अपनी शक्ति के अनुसार सर्दी के दिनों में तो अवश्य ही दण्ड बैठक का अभ्यास करना चाहिए। बीच–बीच में आप आयुर्वेदिक घरेलू उपचार, तथा विषमुक्त कुदरती खेती हेतु जैविक खाद का महत्व, स्वदेशी उत्पादों का प्रयोग बताते रहें।

यज्ञ का एक सुन्दर दृश्य, जिसमें पुरोहित बालिकाएं व यजमान के रूप में महिलाएं हैं- केसरी।

# चौराहे पर रियायती दर पर बेचे सत्यार्थ प्रकाश

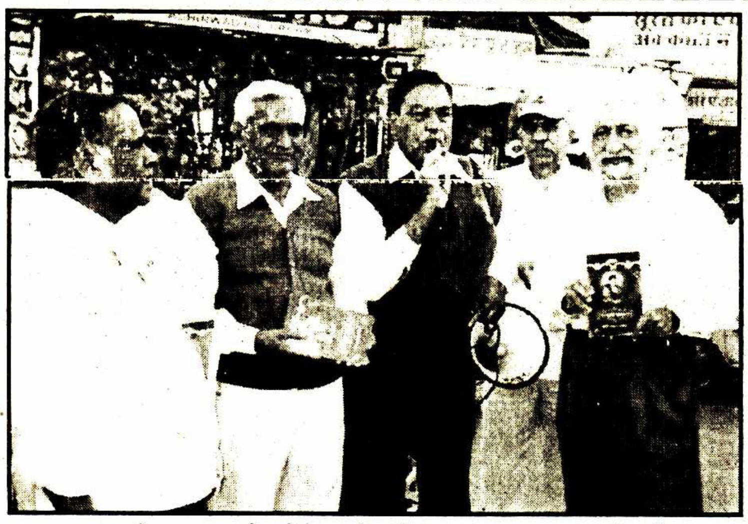

सत्यार्थ प्रकाश बेचते आर्यजनों का एक दृश्य- केसरी।

- **रु. ५०/- का सत्यार्थ प्रकाश दिया मात्र रु. १०/- में**
- **लोगों ने प्रभावित होकर खूब खरीदे सत्यार्थ प्रकाश**

**अरविन्द पाण्डेय**
कोटा (राजस्थान)।

महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत अमर ग्रन्थ ''सत्यार्थ प्रकाश'' भीड़ भरे चौराहे चौपाटी बाजार में आर्य समाज जिला सभा के पदाधिकारियों ने 500 पृष्ठों का व 50 रू0 कीमत का सत्यार्थ प्रकाश मात्र रू0 10/– में आवाज लगा–लगाकर बेचा। आर्य समाज जिला सभा के प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा माइक से सत्यार्थ प्रकाश की विशेषताएं बता रहे थे। ईश्वर का सच्चा स्वरूप ईश्वर के नामों की व्याख्या, समस्त मत मतान्तरों की विवेचना, आश्रम व्यवस्था आदि सत्यार्थ प्रकाश में है। इससे प्रभावित होकर विवेचना, मुस्लिम, सिख, छात्र, महिलाएं लाइन लगाकर सत्यार्थ प्रकाश खरीद रहे थे।

इस अवसर पर आर्य समाज विज्ञान नगर के प्रधान जे0एस. दुबे, आर्य समाज रेलवे कालौनी के प्रधान हरिदत्त शर्मा, आर्य समाज रामपुरा के प्रधान कैलाश बाहेती, आर्य समाज गायत्री विहार के प्रधान अरविन्द पाण्डेय, आर्य समाज तलवण्डी के रामप्रसाद याज्ञिक, चन्द्रमोहन कुशवाहा सत्यार्थ प्रकाश की विशेषता बता रहे थे। सभी ने इसकी प्रशंसा की।


केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के 35 वें वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में
युवा विद्वान आचार्य अखिलेश्वर जी महाराज के ब्रह्मत्व में आर्य नेता डॉ. अशोक कुमार चौहान की अध्यक्षता में

**251 कुण्डीय विराट् यज्ञ**

आशीर्वाद : स्वामी सुमेधानन्द जी, स्वामी दिव्यानन्द जी, स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी धर्ममुनि जी

**अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन**

दिनांक : 24, 25, 26 जनवरी 2014 (शुक्र, शनि व रविवार)

स्थान : रामलीला मैदान, पी.यू.ब्लाक, पीतम पुरा, दिल्ली-34 (निकट कोहाट एन्कलेव मैट्रो स्टेशन)

**विराट् शोभा यात्रा**, शुक्रवार 24 जनवरी, 2014, प्रातः 10.30 बजे

शुभारम्भ : रामलीला मैदान, पी.यू.ब्लाक, पीतम पुरा, दिल्ली से प्रारंभ होगी

**मुख्य आकर्षण**

आर्य महिला सम्मेलन ● राष्ट्रीय वेद सम्मेलन ● शिक्षा-संस्कृति निर्माण सम्मेलन
संगीत संध्या ● व्यायाम प्रदर्शन ● राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन
प्रातः से रात्रि निरन्तर तीनों दिन ऋषि लंगर की सुन्दर व्यवस्था

1. बाहर से आने वाले आर्य बन्धु व आर्य युवक अपने पधारने की व संख्या के बारे में 31 दिसम्बर2013 तक सूचित करने की कृपा करें जिससे भोजन व आवास आदि का उचित प्रबन्ध किया जा सके।
2. कृपया यजमान बनने के इच्छुक आर्य बन्धु , आर्य समाजें अपना यज्ञकुण्ड 31 दिसम्बर 2013 तक फोन न0. 9891142673, 9868664800, 9871581398, 9999995017 पर आरक्षित करवा लें।

हजारों की संख्या में पहुँचकर आर्यसमाज की विराट् संगठन शक्ति का परिचय दें

**केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्** (पंजीकृत), **नई दिल्ली**

कार्यालय : आर्य समाज, कबीर बस्ती, पुरानी सब्जी मण्डी, दिल्ली-110007 दूरभाष : 9810117464, 9013137070, 9868064422, 9958889970


# हर्षोल्लास से मना शताब्दी महोत्सव

**आनन्द प्रकाश आर्य**
भोजपुर खेड़ी (बिजनौर) उ0प्र0।

आर्य उपप्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में आर्यसमाज का शताब्दी महोत्सव 19 से 21 अक्टूबर तक बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर एक भव्य शताब्दी स्मारिका का भी प्रकाशन किया गया। पूरे क्षेत्र में आर्यसमाज की धूम रही। शोभायात्रा समारोह में आकर्षण का केन्द्र रही। वैदिक जयघोषों से सम्पूर्ण परिवेश गुजायमान हो उठा।

समरोह में स्वामी ओमवेश, पूर्व राज्यमंत्री, अनुज शास्त्री, सहारनपुर, ओमप्रकाश वर्मा, यमुना नगर, नरेश दत्त आर्य आदि का मार्गदर्शन मिला। कार्यक्रम में भारी संख्या में स्त्री–पुरुष व बच्चों ने भाग लिया।

# कोई गुरुदेव दयानन्द सा देखा न सुना

डी.पी. मिश्रा
कोटा (राजस्थान)।

आर्य समाज रामपुरा द्वारा संचालित बालभारती आर्य शिशु शाला एवम् मातृ सेवा सदन उच्च प्राथमिक बालिका विद्यालय में संयुक्त यप से महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस मनाया गया।

आर्य समाज रामपुरा, कोटा के मंत्री एंव विद्यालय के व्यवस्थापक डी0पी0 मिश्रा ने प्रेस विज्ञप्ति जारी करते हुए बताया कि कार्यक्रम का शुभारम्भ देव यज्ञ से हुआ। यज्ञ में सैकड़ों छात्र–छात्राओं ने हिस्सा लिया। वैदिक मंत्रों के उच्चारण से सम्पूर्ण वातावरण यज्ञमय हो गया। यज्ञ के पश्चात् दिल्ली से आए प्रसिद्ध भजनोपदेशक पं0 दिनेश दत्त आर्य ने भजनों के माध्यम से महर्षि द्वारा दिए गए उपकारों का वर्णन किया। उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा कि ऋषि ने महिलाओं को शिक्षा का अधिकार दिलाकर सम्पूर्ण नारी जाति का बड़ा उपकार किया है। महर्षि दयानन्द को युग प्रवर्तक की उपाधि देते हुए कहा कि महर्षि की देन है जो आज स्त्री राजनीति के क्षेत्र में बड़े से बड़े पदों को सुशोभित कर रही हैं। तत्कालीन समय में ऋषि ने समाज में व्याप्त आडम्बरों पर पाखण्ड खण्डनी पताका के माध्यम से जबरदस्त प्रहार किया एवं सम्पूर्ण क्रांति का बिगुल बजाया। विद्यालय के वयवस्थापक डी0पी0 मिश्रा ने "यूं तो कितने ही महापुरुष हुए दुनिया में कोई गुरुदेव दयानन्द सा देखा ना सुना" भजन सुनाया जिसे श्रोताओं ने खूब सराहा। बिजनौर से आए पं0 विष्णु मित्र शास्त्री ने अपने उद्बोधन में कहा कि वेद ही सब धर्मों का मूल आधार है। महर्षि दयानन्द वेदों के आधार पर एक ऐसी मान आचार संहिता बनाने के पक्षधर थे जिसे सभी पंथ, मत और सम्प्रदाय अपनाकर अपना जीवन यापन कर सकें। शाहजहांपुर जिले में महर्षि ने एक बैठक कर इस आचार संहिता का प्रस्ताव भी रखा था। दयानन्द पहले व्यक्ति थे जिन्होंने स्वराज का सुराज का स्वदेशी का स्वभाषा का एवं स्वसंस्कृति का स्वाभिमान का समाघोष एक साथ लगाया। कार्यक्रम की अध्यक्षता राजेन्द्र सक्सेना ने की।

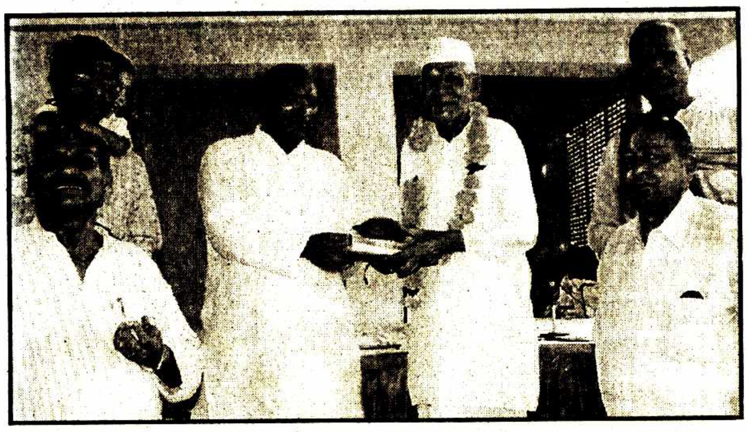

शिव नारायण उपाध्याय को रु. २१०००/- की थैली भेंट करते आचार्य विष्णुमित्र शास्त्री- केसरी।

इस अवसर पर उपस्थित आग्र समाज भीमगंज मण्डी के राजेन्द्र आर्य, आर्य परिवार संस्था के मंत्री इन्द्र कुमार सक्सेना, प्रधान प्रेमनाथ कौशल आर्य समाज तलवण्डी के हनुमान प्रसाद आर्य पत्रकार रमेश मोदी, हाडौती किसान यूनियन के महामंत्री दशरथ कुमार आर्य समाज रेवले कोलोनी के धीरेन्द्र गुप्ता ने भी अपने विचार व्यक्त किये। इस अवसर पर कोटा के वैदिक विद्वान शिव नारायण उपाध्याय को उनकी पुस्तक वेदों में विज्ञान, वेदों में न्याय प्रणाली एवं अन्य कई उपलब्धियों के लिए 21000 (इक्कीस हजार रूपये) की थैली श्रीफल एवम् शाल भेंटकर सम्मानित किया गया। शिक्षा के क्षेत्र में उपलब्धियों के लिए यशोदा रानी सक्सेना को एवम् सामाजिक कार्यो में विशेष उपलब्धियों के लिए जानकी देवी वर्मा, शान्ता गोल्ड स्मिथ, सुरेश चन्द्र दीक्षित को भी सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालक मृदला सक्सेना ने किया। रात्रि 10 बजे प्रसाद वितरण एवम् शान्ति पाठ के पश्चात् कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

## औरेन्ज डिज़ाइन्स प्राईवेट लिमिटेड के सहयोग से ओउम् साधना मण्डल द्वारा यज्ञ एवं प्रवचन

विभु सहगल
गुड़गांव (हरियाणा)।

स्वामी दयानन्द विदेह के मार्गदर्शन में श्रद्धापूर्वक यज्ञ सम्पन्न हुआ। स्वामी जी ने इस अवसर पर ज्योति अर्थात् आत्म अवस्थिति अर्थात् जीवन में जागते रहो इधर–उधर मत भागो। गुरु वही होता है जो ज्ञान प्रकाश के द्वारा आध्यात्मिक शक्तियों को जगाता है। वह शिष्य ही सजग है जो गुरू के इशारों में ही गलतियों को दूर करने में सफल होता है।

गुरू और शिष्य को अन्तेवासी कहा गया है। अर्थात् दोनों साथ–साथ सजग होकर उन्नति के सौपान पर आगे–आगे बढ़ते जाते हैं। आज गुरू चेले दोनों पथ–भ्रष्ट हो रहे हैं और धर्म को बदनाम कर रहें है। आओ सभी मिल कर धर्म को बदनाम होने से रोकें। स्वामी जी ने यज्ञ का मर्म समझाते हुए कहा कि सुगन्धी अर्थात् ओज–तेज के द्वारा यशस्वी जीवन बनाना चाहिए। आज राष्ट्र के तथाकथित भ्रष्ट नेता गुरू, स्वादुओं ने राजनीति, धर्म समाज को अपयश के मार्ग पर फेंक दिया है। इसी क्रम में जवाहर लाल सहगल के निवास पर प्रेरणाप्रद स्वामी जी का प्रवचन हुआ। माता किरण सहगल, जवाहर लाल सहगल तथा कम्पनी के स्टाफ का प्रशंसनीय सहयोग रहा।

## आर्य समाज के चुनाव सम्पन्न

तुलसीराम आर्य
रामां मंडी (भटिंडा) पंजाब।

आर्य समाज के प्रधान पद व सभी कार्यकारिणी सभा के चुनाव की कार्यवाही प्रातः हवन यज्ञ के बाद चुनाव अधिकारी वेद प्रकाश श्रोवर की अगुवाई में शुरू हुई। सर्व सम्मति से सतपाल आर्य को इस बार फिर से आगामी वर्ष के लिए प्रधान चुन लिया गया। उप प्रधान पद के लिए विजय कुमार को चुना गया। मंत्री पद के लिए शक्ति प्रकाश को चुना गया। कोषाध्यक्ष पद के लिए बलराज को चुना गया।

सभी पदाधिकारी सर्व सम्मति से चुने गये। नये चुने गये अधिकारियों नें समाज के प्रति पूरी निष्पक्ष व लगन से कार्य करने का संकल्प लिया। प्रधान जी ने सभी का धन्यवाद किया।

## एक शाम- ऋषि दयानन्द के नाम

**नई दिल्ली।** केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् द्वारा भारत विकास परिषद् (पीतमपुरा) के सहयोग से महर्षि दयानन्द के 130वें बलिदान दिवस पर दिल्ली हाट, पीतमपुरा (दिल्ली) में 4 नवम्बर को एक शाम ऋषि दयानन्द के नाम से भजन संध्या नरेन्द्र आर्य 'सुमन' एवं सुदेश आर्या द्वारा प्रस्तुत की। इस अवसर पर आचार्य गवेन्द्र शास्त्री के ब्रह्मत्व में यज्ञ हुआ जिसमें दर्शन अग्निहोत्री दम्पति मुख्य यजमान थे।

## ऋग्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न

**गाजियाबाद।** ब्रह्मचारी कृष्णदत्त की प्रेरणा से याज्ञिक बने ग्रामों की श्रृंखला में एक नाम मकनपुर का भी है, जो अब इन्दिरापुरम् के नाम से भी जाना जाता है। इस ग्राम में जयप्रकाश त्यागी (सैकेट्री) सुरेन्द्र त्यागी, कपिल एवं शेखर के परिवार द्वारा प्रतिवर्ष यज्ञ कराये जाते हैं। इसी कड़ी में ऋग्वेद परायण यज्ञ आचार्य जयवीर (बरनावा) के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। मुख्य यजमान जयप्रकाश सैकेट्री रहे।

# वैवाहिक परिचय सम्मेलन की एलबम का विमोचन

अर्जुनदेव चड्ढा
कोटा (राजस्थान)।

आर्य युवक वैवाहिक परिचय सम्मेलन की एक लंबे समय से चिर–परिचित आवश्यकता अनुभव की जा रही थी। जिसे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने हाथ में लेकर एक प्रशंसनीय तथा अनुकरणीय कार्य किया है। उक्त विचार आर्य समाज के अन्तराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वान डॉ0 वागीश आचार्य ने आर्य परिवार वैवाहिक परिचय सम्मेलन की मीडिया एलबम का विमोचन करते हुए व्यक्त किये।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय में आर्य वैवाहिक परिचय सम्मेलन के राष्ट्रीय संयोजक अर्जुनदेव चड्ढा (कोटा) द्वारा तैयार की गई एलबम के विमोचन के अवसर पर डॉ0 वागीश आचार्य ने कहा कि आर्य परिवार वैवाहिक परिचय सम्मेलन के इस कार्य का और अधिक विस्तार कर प्रान्तीय स्तर पर आयोजन किया जाना चाहिए। इस अवसर पर अर्जुनदेव चड्ढा ने कहा कि अब तक संपन्न हुए पांच सम्मेलनों के आशातीत परिणाम सामने आये हैं, इसी को देखते हुए आर्य परिवारों का रूझान इन सम्मेलनों के प्रति बढ़ रहा है। इस अवसर पर आचार्य धनन्जय शास्त्री जातवेदाः दुर्ग, कोटा जिला के संयोजक रामप्रसाद याज्ञिक, दिल्ली की महिला संयोजिका विभा आर्या, बीना आर्या, धर्मेश आर्य विचार टीवी आदि उपस्थित थे।

मीडिया एलबम का विमोचन करते डॉ. वागीश व अन्य- केसरी।

ऋषि प्रणाली का निःशुल्क शिक्षा केन्द्र

**गुरुकुल आर्यनगर (हिसार) हरियाणा**

**आवश्यकता है**

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार से मान्यताप्राप्त इस गुरुकुल में एक प्रशिक्षित विज्ञान अध्यापक की आवश्यकता है। सेवामुक्त अध्यापक को प्राथमिकता। वेतन योग्यता एवं अनुभव के आधार पर।

-रामस्वरूप शास्त्री (मुख्याधिष्ठाता)

मोबा. : 09466403222, 09466613413

## आर्यावर्त केसरी के सम्मानित सदस्य महानुभावों की सेवा में निवेदन

आर्यावर्त केसरी पाक्षिक निरन्तर आपकी सेवा में पहुंच रहा है। जिन सम्मानित सदस्य महानुभावों ने अभी तक अपना वार्षिक सदस्यता सहयोग या पिछला सदस्यता सहयोग नहीं भेजा है उनसे विनम्र अनुरोध है कि वह अपना वार्षिक सहयोग जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। आर्यावर्त केसरी का वार्षिक सदस्यता सहयोग मात्र 100/- रुपये है और आजीवन सदस्यता सहयोग 1100/- रुपये है। साथ ही, संरक्षक सदस्यता सहयोग 3100/- रुपये है। इसलिये सभी सदस्य महानुभावों से निवेदन है कि वह अपना सहयोग जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। इसके साथ ही आर्य समाजों के पदाधिकारियों एवं सदस्यों से भी निवेदन है कि वह आर्यावर्त केसरी के अधिक से अधिक सदस्य बनाने में सहयोग करें। आशा है आपका सहयोग हमें अवश्य प्राप्त होगा।

-व्यस्थापक, आर्यावर्त केसरी

# आत्मा को करें ज्ञान से प्रकाशित : अग्निमित्र

## कोटा में हुआ भव्य समारोह

**अरविन्द पाण्डेय**
कोटा (राजस्थान)।

हमें अपनी आत्मा को ज्ञान से प्रकाशित करना चाहिए। वैदिक ज्ञान आत्मा के अज्ञान तथा अंधविश्वास को दूर करता है। यह बात आचार्य अग्निमित्र शास्त्री आर्य समाज गायत्री विहार में कोटा की सभी आर्य समाजों द्वारा संयुक्त रूप से मनाये गये महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस और शारदीय नवसस्येष्ठी (दीपावली) पर्व के अवसर पर आयोजित समारोह में कहीं।

उन्होंने कहा कि हमारा मूल स्वभाव प्रकाश की ओर बढ़ना है। इसलिए हम प्रकाश का यह पर्व मनाते हैं। हमें अंदर के अंधकार को वैदिक ज्ञान से दूर कर स्वयं को प्रकाशित करना चाहिए। महर्षि दयानन्द का निर्वाण दिवस हमें यही शिक्षा प्रदान करता है। जैसे उन्होंने स्वयं को वेदों के आलोक से प्रकाशित किया और जीवनभर समाज में व्याप्त अज्ञान, अंधविश्वास और कुरीतियों को दूर करते रहे वैसे ही हमें भी करना चाहिए। इस अवसर पर सुदेश आहूजा, व्याख्याता राजकीय महाविद्यालय कोटा ने कहा कि वेदों में अग्नि और सूर्य की उपासना हमें अंधकार से प्रकाश की ओर जाने की प्रेरणा प्रदान करती है।

आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुन देव चड्ढा ने कहा कि वेद हमें परोपकार करने का आदेश देते हैं, इसलिए हमें जरूरतमंद, निराश्रित और दुखी मानवता की सेवा पर उनके जीवन में खुशियां लानी चाहिए। आर्य विद्वान रामप्रसाद याज्ञिक ने कहा कि दीपावली वैदिक पर्व है। वैदिक काल में इसे शारदीय नवसस्येष्टी कहा जाता था और नई फसल आने पर सर्वप्रथम आज ही के दिन उसकी यज्ञों में आहुति प्रदान कर यह पर्व मनाया जाता था।

गायत्री विहार आर्य समाज के प्रधान अरविन्द पाण्डेय ने कहा कि आज दीपावली के ही दिन सन् 1883 में अजमेर में आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती ने देहत्याग की थी। देहावसान के अवसर पर उनके अदम्य आत्मविश्वास और दृढ़ ईश्वर भक्ति को देखकर गुरुदत्त विद्यार्थी जैसा नास्तिक व्यक्ति भी आस्तिक बन गये थे। कार्यक्रम के अध्यक्ष राजस्थान प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान हरिदत्त शर्मा ने कहा हमें आर्य अनुकूल संस्कार नई पीढ़ी में डालने चाहिए। उन्होंने नमस्ते का महत्व बतलाया। कार्यक्रम का प्रारम्भ आचार्य अग्निमित्र शास्त्री के पौरहित्य में आयोजित शारदीय नवसस्येष्टी (यज्ञ) से हुआ।

इस अवसर पर उपस्थित जनों द्वारा वेद के मंत्रो से विधिवत् नवीन अन्न की आहुतियां प्रदान की गई। कार्यक्रम में जिला आर्य सभा कोटा द्वारा दशहरा मेले में आयोजित वैदिक साहित्य एवं महर्षि दयानन्द जीवन दर्शन प्रदर्शनी के किये गये उल्लेखनीय सेवा कार्यो के उपलक्ष्य में महर्षि दयानन्द वेद प्रचार समिति के अध्यक्ष अरविन्द पाण्डेय का आर्य समाज जिला सभा द्वारा शॉल ओढ़ाकर स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया गया, साथ ही आर्य समाज गायत्री विहार द्वारा दशहरा मेला चित्र प्रदर्शनी में उल्लेखनीय सेवाओं के लिए पं० क्षेत्रपाल आर्य, उषा भटनागर और बालिका विभूती वासुदेव द्वारा सुमधुर भजन प्रस्तुत किये गये। इस अवसर पर बड़ी संख्या में कोटा के सभी आर्य समाजों के अधिकारिगण तथा सदस्य और गणमान्य जन उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन और अंत में धन्यवाद ज्ञापन आर्य समाज गायत्री विहार के मंत्री उमेश कुर्मी द्वारा किया गया।

अरविन्द पाण्डेय को सम्मानित करते पदाधिकारी- केसरी।

# गढ़ में आर्य महासम्मेलन संकल्प के साथ सम्पन्न

**वेदमित्र आर्य बंधु**
हापुड़ (उ.प्र.)।

प्रांतीय आर्य महासम्मेलन आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश तथा आर्य उपप्रतिनिधि सभा हापुड़ के संयुक्त तत्वावधान में गढ़ नगर में बड़े ही उत्साह पूर्वक संपन्न हुआ। मिडिया प्रभारी वेद मित्र आर्य बंधु ने बताया कि प्रथम दिन प्रातः यज्ञ से वातावरण सुगंधित हो गया जिसके मुख्य यज्ञमान मंत्री जिला उपसभा अशोक कुमार आर्य रहे। स्वामी धर्मेश्वरानन्द ने योग क्रियाओं को बताया। पूठ के ब्रह्मचारियों ने हैरतअंगेज करतब दिखाकरर लोगों को तालियां बजाने के लिये विवश कर दिया।

प्रथम दिन ही प्रधान देवेन्द्रपाल वर्मा ने ध्वजा रोहण किया तथा उन्होंने अपने उद्‌बोधन में आर्यो को संगठित होकर वेद प्रचार करने की सलाह दी तथा देश से अन्धविश्वास को समाप्त करने की प्रेरणा दी।

गो रक्षा एवं किसान सम्मेलन में बोलते हुये भाकियू के राष्ट्रीय प्रवक्ता चौधरी राकेश टिकैत ने कहा कि सरकार को शीघ्र ही गन्ने का मूल्य बढ़ाना चाहिये, नहीं तो हमें आन्दोलन करने के लिये विवश होना पड़ेगा। समारोह की अध्यक्षता करते हुए स्वामी आर्यवेश ने कहा कि किसान ही देश का अन्नदाता है और वह देश की रीढ़ है। किसान तो राजाओं का राजा है उसे अपनी फसल का पूरा मूल्य मिलना चाहिये। उन्होंने कहा कि जो किसान की फसल से जुड़ा है वह सभी किसान हैं चाहे वह मजदूर है, व्यापारी है, खरीदार है, इसलियें हमें सभी को साथ लेकर चलना होगा तभी हमारा उद्‌देश्य पूरा होगा। उन्होंने जोर देकर कहा कि इस उदार और नम्र बने, याज्ञिक बनें, सभी मिलकर पंच यज्ञ करें यदि हम इस पर ध्यान देंगे तो आनन्द ही आनन्द प्राप्त होगा।

दूसरे दिन स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती ने अध्यक्षता करते हुये कहा कि वैदिक संस्कृति के विनाश के कारण लार्ड मैकाले की शिक्षा पद्धति है, आज के युवक वैदिक संस्कारों के अभाव में विनाश की ओर बढ़ रहे हैं। हमें इसे रोकना होगा और नारी को सम्मान देना होगा। जिससे समाज स्वतः ही आगे बढ़ेगा तथा समाज का युवक सुधारेगा। आचार्य ओमवृत ने कहा कि लोग परमात्मा को जान सकें इसलिये वैदिक संस्कृति का प्रचार हो, वेदों का पठन–पाठन सभी का धर्म है। आर्य समाजी ही श्रेष्ठ लोगों का समाज है। इसका प्रचार घर–घर में हो।

नारी जागरण पर बोलते हुये कविता चौधरी ने नारी जाति के महत्व को समझाते हुये संगठित होने की प्रेरणा दी। अन्तिम दिन आर्य परिवार एवं राष्ट्र निर्माण सम्मेलन की अध्यक्षता ओमवीर सिंह तथा ठाकुर विक्रम सिंह ने की। इस अवसर पर वक्ताओं ने बच्चों को समाज के आदर्श बनने की बात कहते हुए संस्कारवान बनाने पर जोर दिया। इस अवसर पर एस०डी०एम० जयशंकर मिश्र ने कहा कि पुरानी व्यवस्थायें ही समजा को बिगाड़ रही हैं। उन्होंने पश्चिमी सभ्यता को त्याग कर वेदों की संस्कृति को अपनाने पर जोर दिया। स्वामी विश्वानन्द सरस्वती ने कहा कि पाश्चत्य संस्कृति के बढ़ते इस दौर में हमारी गौरवमय संस्कारों पर चोट पहुंच रही है। जिस पर अकुंश लगाने के लिये हमे वेदों को पढ़ना और पढ़ाना बहुत जरूरी है। हमें देव यज्ञ को घर में पहुंचाना होगा। सभा के प्रधान देवेन्द्रपाल वर्मा ने कहा कि समाज में अन्धविश्वास बढ़ता जा रहा है। दहेज के नाम पर अवलाओं पर अत्याचार हो रहे हैं। उन्होंने अच्छे नागरिक बनने के लिये आर्य सदस्य बनने पर जोर दिया। सांसद राजेन्द्र अग्रवाल, कांठ के पूर्व विधायक राजेश, भाजपा के नेता सुरेश नागर, हापुड़ के पुरोहित धर्मेन्द्र शास्त्री, ज्ञानेन्द्र चौधरी, वेगराज भूडिया, जिला सभा के प्रधान डॉ० विकास आर्य आदि ने भी विचार रखे। सम्मेलन का सफल संचालन स्वामी धर्मेन्द्र ने किया। सम्मेलन को सफल बनाने तथा खाने आदि की व्यवस्था आर्य उपप्रतिनिधि सभा, हापुड़ ने की। प्रधान डॉ० विकास आर्य, अशोक आर्य, ज्ञानेन्द्र चौधरी, सुन्दरलाल, वेदमित्र आर्य वैद्य, सुरेन्द्र कवाड़ी, आदि ने बड़े उत्साह एवं लगन से कार्य किया। सम्मेलन में बनारस, आगरा, इलाहाबाद, बुलन्दशहर, गोरखपुर, शामली, साहनपुर, गाजियाबाद, अमरोहा, मेरठ, लखनऊ, कानपुर, बागपत, अलीगढ़, हापुड़ आदि के आर्य समाजों के प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया। विद्या मन्दिर गढ़ का स्टाफ, प्रबन्धक, प्रधानाचार्य आदि के भरपूर सहयोग से कार्यक्रम सफलता को प्राप्त हुआ।

## यज्ञ सर्वांग पूजा

ग्रेटर नोएडा। ग्राम मुर्शदपुर में प्रतिवर्ष कई परायण यज्ञ कराने वाले जग्गू सिंह प्रधान के यहां विक्रम वैद्य (बरनावा) के ब्रह्मत्व में यज्ञ बड़ी धूमधाम से सम्पन्न हुआ जिसमें उनके पुत्र यशराज शास्त्री एवं हंसराज वकील यजमान रहे। इस अवसर पर वैद्य विक्रम देव शास्त्री ने कहा कि यज्ञ एक सर्वांग पूजा है। इससे सभी जड़ एवं चैतन्य देवों को आहूति से जहां प्रसन्नता और पुष्टि मिलती है वहीं यज्ञकर्ता का हृदय भी निर्मल होता है। उसका अन्तःकरण तथा बाह्य जगत दोनों सुन्दर बनते हैं।

## टंकारा में बोधोत्सव

**रामनाथ सहगल**
टंकारा (गुजरात)।

आर्य जनों को यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता होगी कि प्रतिवर्ष की भांति आगामी वर्ष में महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में शिवरात्रि के पावन पर्व पर भव्य ऋषि बोधोत्सव का आयोजन 28 फरवरी 2014 तक किया जायेगा।

टंकारा ट्रस्ट द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति में आर्यजनों से तिथियाँ अभी से अंकित कर लेने और इन तिथियों में अपनी आर्य समाज एवं अपनी संस्था का कोई कार्यक्रम न रखकर उक्त समारोह में अधिक से अधिक आर्यजनों के साथ टंकारा पधारने की अपील की है। आवास एवं भोजन की व्यवस्था टंकारा ट्रस्ट की ओर से होगी।

## वार्षिकोत्सव २० से

**दुर्ग (छत्तीसगढ़)।** आर्य समाज सेक्टर-6 भिलाई नगर का 54वां वार्षिकोत्सव एवं अथर्ववेद महायज्ञ 20 से 22 दिसम्बर तक मनाया जायेगा। जिसमें आर्यजगत के विद्वानगण व भजनोपदेशक भाग लेंगे।

### ३० दिसम्बर जन्म तिथि

**प्रखर राष्ट्रवादी सांसद आर्य नेता, हिन्दी के उपासक, ओजस्वी वक्ता प्रकाशवीर शास्त्री को शत्-शत् नमन्**

आर्योप प्रतिनिधि सभा, अमरोहा

# 'लौह पुरुष' सरदार पटेल

आज हम जिस विशाल भारत को देखते हैं उसकी परिकल्पना सरदार वल्लभभाई पटेल के बिना पूरी नहीं हो सकती। सरदार पटेल एक ऐसे महानायक थे जिन्होंने देश के छोटे-छोटे रजवाड़ों और राजघरानों को एक कर भारत में सम्मिलित किया। उनकी दृढ़ इच्छा शक्ति और नेतृत्व कौशल का ही यह कमाल था कि 600 देशी रियासतों का भारतीय संघ में विलय हो सका। वे भारत के प्रथम गृह मंत्री और प्रथम उपप्रधानमंत्री थे। उनके द्वारा किये गये साहसिक कार्यों के कारण ही उन्हें 'लौह पुरुष' और 'सरदार' जैसे विशेषणों से विभूषित किया गया। बिस्मार्क ने जिस तरह जर्मनी के एकीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई उसी तरह पटेल ने भी आजाद भारत को एक विशाल राष्ट्र बनाने में उल्लेखनीय योगदान दिया। 31 अक्टूबर सन् 1875 को गुजरात के नाडियाड में जन्मे सरदार पटेल पिता झावेर भाई पटेल की चौथी संतान थे। उनकी माता का नाम लाडवा पटेल था।

कई इतिहासकार यहां तक मानते हैं कि यदि सरदार पटेल को प्रधानमंत्री बनने दिया होता तो चीन और पाकिस्तान के युद्ध में भारत को पूर्ण विजय मिलती, परन्तु गांधी जी के जग जाहिर नेहरू प्रेम ने उन्हें प्रधानमंत्री बनने से रोक दिया। वास्तव में, भारत को जो आजादी मिली वे पाकिस्तान की कीमत पर मिली थी। यदि भारत छोटी-छोटी रियासतों को एक नहीं कर पाता तो एक बड़े भारत वर्ष का सपना चकनाचूर हो जाता। इस दृष्टि से सरदार पटेल की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण थी। 15 अगस्त 1947 तक हैदराबाद, कश्मीर और जूनागढ़ को छोड़कर शेष भारतीय रियासतें 'भारत संघ' में सम्मिलित हो गयी थीं। जूनागढ़ के नवाब के विरुद्ध जब विरोध बढ़ गया तो वह भागकर पाकिस्तान चला गया और जूनागढ़ भी भारत में मिल गया। जब हैदराबाद के निजाम ने भारत में विलय का प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया तो सरदार पटेल ने वहां सेना भेजकर निजाम का आत्म समर्पण करा लिया। माना जाता है कि पटेल कश्मीर को भी बिना शर्त भारत से जोड़ना चाहते थे किन्तु नेहरू जी ने हस्तक्षेप कर कश्मीर को विशेष दर्जा दे दिया। नेहरू जी ने कश्मीर के मुद्दे को यह कहकर अपने पास रख लिया कि यह समस्या एक अन्तरराष्ट्रीय समस्या है। अगर कश्मीर का निर्णय भी सरदार पटेल के हाथ में होता तो आज कश्मीर नाम की कोई समस्या नहीं होती। सरदार पटेल का निधन 15 दिसम्बर 1950 को मुम्बई में हुआ। आज सम्पूर्ण भारत वर्ष उनके प्रति नत् है। निश्चय ही सरदार वल्लभ भाई पटेल भारत के उन महान राष्ट्रवाद नायकों में से एक हैं, जिनपर हम सभी को गर्व है। 63वीं पुण्यतिथि पर कोटिशः नमन्।

# अन्तिम-विदाई-उपहार

महोदय,

प्रिय मित्रों! जब किसी विभाग कार्यालय, संस्था का कोई व्यक्ति कर्मचारी लम्बी सेवा अवधि के बाद सेवानिवृत्त होकर अपने घर जाता है, तब उसके सम्मान में अन्य सहकर्मी उसे जलपान के साथ विदाई उपहार देते हैं। अंग्रेजों में इसे फेयरवेल पार्टी गिफ्ट कहते है। क्या, कैसा उपहार देते हैं? ऐसी वस्तु उसे भेंट करते हैं जो उसके आगामी जीवन में काम आती रहे। ऐसी चीज मामूली कीमत से लेकर बड़ी कीमती भी हो सकती है। जैसे छतरी, टार्च कोई अंगवस्त्र कम हल्की कीमत में आ सकती है। भारी कीमत की आईटम रिस्ट वाच (हाथ घड़ी), साईकिल, रेडियो इत्यादि हो सकती है। कहने का तात्पर्य यह है कोई ऐसी वस्तु नहीं देते जो उसके काम ना आये।

अब आप थोड़ा विचार करें। यदि हमारा कोई रिश्तेदार या इष्ट मित्र अपनी जीवनयात्रा पूरी करके अपने भौतिक शरीर को छोड़ देता है तब आप उसे अन्तिम विदाई उपहार क्या देते हो? हम देखते हैं उसके नृतक शरीर पर कीमती चादर डालते हैं। क्या आपकी यह चादर उसके कुछ काम आयेगी? ये सब चादरें अन्त्येष्टि स्थल पर उतार ली जाती हैं, जो ड्राईक्लीन होकर फिर मार्किट में आजाती हैं। आप ऐसा उपहार क्यों नहीं देते जो उसकी सद्गति में काम आये। आप कहोगे वो क्या है? भाई साहब आप अपने सामर्थ्य के अनुसार घी का पैकेट दे सकते हो। मंहगा होने के कारण घी नहीं दे सकते तब दो-तीन गोले ले जाओ। तोड़कर उसकी चिता पर चढ़ा दो। ये भी नहीं तो सामग्री का पैकेट ही दे दो। काफूर भी बड़े काम की चीज है इनमें से कोई वस्तु अन्तिम विदाई उपहार के रूप में दे सकते हो जो दाहकर्म में उपयोगी है।

पुनः कहना चाहता हूँ जितने रुपयों में चादर आयेगी उतन में आधा किलो घी का पैकेट भी आजायेगा। आप चादर की बजाय उसे काम की चीज भेंट करो। जहां तक हो सके अपनी श्रद्धा से कुछ लेकर जाओ। शव को दुर्गाति से बचाओ।

**देवराज आर्य मित्र**
**डब्ल्यू. जैड-428, हरीनगर,**
**नई दिल्ली**

# धर्म का यथार्थ स्वरूप 'वेद'

**शिवकरण दूबे वेदराही**

हर पदार्थ का निज स्वरूप एवं निश्चित धर्म होता है जिससे उस तत्व या पदार्थ का अस्तित्व एवं विकास होता है। अग्नि का धर्म ज्वलनशीलता है। यदि अग्नि में यह दाहकता न हो तो वह आग नहीं राख है। इसी प्रकार मनुष्यमात्र का भी धर्म है जिसे मानव धर्म कह सकते हैं। मानव धर्म का सामान्य अर्थ है मनुष्य के वे गुण, कर्तव्य, विशेषताएं जिससे उसका शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक विकास, प्रगति, कल्याण एवं उत्थान हो। 'यथो अभ्युदय निःश्रेयस सिद्धिः स धर्मः- महर्षि कणाद ऋषि के वैशिषक दर्शन के वचन 1/1/2 से यही अर्थ ध्वनित होता है जिसका अभिप्राय है- जिससे मनुष्य की लौकिक एवं आध्यात्मिक उन्नति हो वह धर्म है। वस्तुतः धर्म मानव मात्र के द्वारा धारण करने वाले वे ज्ञानमय कर्तव्य, आचरण, नैतिक मूल्य एवं विधि सम्मत मर्यादाएं हैं जो मानव के सर्वांगीण विकास में सहायक है।

इस सृष्टि में मनुष्य एक ऐसा प्राणी है जो अन्य भोग योनियों से श्रेष्ठ ज्ञानपूर्वक जीवन यापन करने में समर्थ है। उसके विकास एवं उत्थान की जितनी संभावनाएं हैं वह अन्य प्राणियों को सुलभ नहीं है। वस्तुतः यह मानव जीवन दुर्लभ है तथा इस जीवन में वह ज्ञान, कर्म, उपासनादि के द्वारा मोक्ष का भी अधिकारी बनता है। 'बड़े भाग मानुष तन पावा' की उक्ति इसी तथ्य की ओर इंगित करती है। इस सृष्टि के रचयिता ने इस महान मानव जीवन के विकास एवं उत्थान के लिए ही उसे इतना विकसित मस्तिष्क दिया है जिसमें ज्ञान अर्जन की अनंत संभावनाएं हैं। इसीलिए मोक्ष प्राप्ति के अधिकारी मानव के लिए ईश्वरीय ज्ञान के रूप में आदि सृष्टि से ही सर्वज्ञानमय वेद का प्रादुर्भाव माना जाता है। जिसमें मानव के लिए धर्म, अर्थ, काम मोक्ष का विधान किया गया है। अतः महर्षि मनु ने सृष्टि उत्पत्ति के साथ धर्म की उत्पत्ति का मूल कारण बताते हुए कहा है कि "सर्वेषां तु नामानि कर्माणि व पृथक-पृथक। वेद शब्दोभ्यः एव आदौ पृथक संस्थाश्च में ईश्वरः (मानव धर्मशास्त्र अध्याय प्रथम, श्लोक 21) अर्थात् परमात्मा ने सब पदार्थों के नाम और मनुष्य के लिए समस्त कर्मों का विधान वेद में किया। इसीलिए वैदिक संस्कृति के महान विद्वान महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने वेद को सब सत्य विद्याओं की पुस्तक घोषित करते हुए उसके अनुकूल आचरण को परमधर्म बतलाया। इस प्रकार धर्म मानव के लिए विहित एंव करणीय कर्मो का शाश्वत विधान है जिसे मानव प्रजा के लिए परम पिता परमात्मा ने वेद के माध्यम से किया है। वस्तुतः धर्म का मूल कारण ईश्वर है। परमात्मा अपने अमृत पुत्रों के कल्याण के लिए सर्वज्ञानमय वेद का ज्ञान देते हैं जो धर्म का मूल है। अतः "वेद अखिलो धर्म मूलम स्मृतिशीले तद्विदाम्। आचारश्चैव साधूनाम आत्मतुष्टिरेव च" का घोष करते हुए महर्षि मनु ने मानव धर्मशास्त्र में लिखा है वेद और उन वेदों के पारंगत विद्वानों के द्वारा रचे गए शास्त्र अर्थात् वेदानुकूल ग्रंथ साधु पुरुषों का आचरण और ऐसे ही महात्माओं की आत्मा के अन्तःकरण के अनुकूल सत्य धर्म के मूल कहे गए हैं। चारों वेदों में मानव के ज्ञान, कर्म, उपासना एवं विज्ञान के लिए विधि-निषेध पूर्वक उपदेश दिए गए हैं। वेदों में सभी सत्य विद्याएं हैं। वेदों से ही सभी शास्त्रों का उद्भव हुआ है। वेदों का अध्ययन करके ऋषियों ने स्मृतियां, आरण्यक, उपनिषदें, धर्मशास्त्र, दर्शन, शिक्षा, कल्प, योगशास्त्र आयुर्वेद आदि ज्ञान के ग्रंथों की रचना की। इसीलिए तो निःसृतं सर्व शास्त्रं तु वेदशास्त्र सनातनात्, सर्वज्ञानमयों हि सः तथा वेदः चक्षुः सनातनम् आदि शास्त्र वाक्यों के प्रमाण हैं। वेद में जिन कर्मों की प्रेरण की गई है। वही विधेय कर्म धर्म कहलाते हैं। जिन कर्मों के त्याग का वेद में उपदेश है वही निषेध है और उनका आचरण अधर्म है। जो वेद के अनुकूल है वह धर्म और जो वेद के प्रतिकूल है वह अधर्म है। वेद सब सत्य विद्याओं के भण्डार हैं।

अतः गोस्वामी तुलसी दास ने रामराज्य का दिग्दर्शन कराते हुए लिखा है कि 'वर्णाश्रम निज-निज धरम निरत वेद पथ लोग। चलहिं सदा पावहि सुखहि नहि भय शोक न रोग। अर्थात् रामराज्य में जनमानस वेदानुकूल आचरण करते थे। मर्यादा पुरुषोत्तम राम को वाल्मीकि ने वेद वेदांग तत्वज्ञः तथा रामो हि विग्रहवान धर्मः कहकर अभयर्थना की है। वस्तुतः राम धर्म के मूर्तिमान स्वरूप थे। इसीलिए तो राम का चरित्र धर्मप्राण जनमानस में आचरण का प्रतिमान बना हुआ है। धर्म के यथार्थ स्वरूप को न जानकर अनेक लोग धर्म के नाम से नाक भौं सिकोड़ते हैं तथा अज्ञान के कारण धर्म के नाम पर स्वार्थवश फैलाए गए पाखंड, अनाचार ढोंग, अंधविश्वास को धर्म मानकर अन्ततः धर्म से घृणा करते हैं। कुछ लोग इसलिए भी धर्म की उपेक्षा करते हैं कि उन्हें सच्चे धर्म का बोध नहीं है और वे पंथों, मज़हबों द्वारा स्वार्थ हेतु फैलाए गए क्रियाकलापों, अनुष्ठानों पंडा एवं पैरोहित्यवाद को धर्म मानते हैं। अतः धर्म का वास्तविक सार्वभौम एवं विश्वमान के लिए एक समान स्वरूप को समझने की आवश्यकता है, हमें धर्म के लक्षणों को देखना चाहिए। मानव धर्म शास्त्र में धर्म के लक्षणों को प्रतिपादित करते हुए लिखा गया है कि धृतिः क्षमा दमों अस्तेयं शौचं इंद्रिय निग्रहः। धीर्विद्या सत्सम अक्रोधः दशकं धर्म लक्षणः। अर्थात् धैर्य, क्षमा, मन का निग्रह, चोरी का परित्याग, शरीर की शुद्धि मन एवं आत्मा की पवित्रता, इन्द्रियों का संयम, विद्या, सत्य अक्रोध धर्म के लक्षण हैं। वास्तव में धर्म श्रेष्ठ मानव मूल्यों उत्तम कर्तव्यों की समष्टि का नाम है। धर्म तो मनुष्य के वैयक्तिक, सामाजिक एवं आत्मिक कर्तव्यों को कहते हैं। जब हम कहते हैं-माता, पिता, भाई, पुत्र गुरु, विद्यार्थी, शिक्षक, नागरिक का धर्म तो कर्तव्य परक आचरण को व्यक्त करता है। जब हम कहते हैं- अहिंसा सत्य धर्म है, दया धर्म है, शिष्टाचार, ब्रह्मचर्य धर्म है तो यह सदाचार संज्ञक हो जाता है। जब कहा जाता है कि अपराधि को दण्ड दो तो धर्म न्याय परक हो जाता है। जब कहा जाता है शौच धर्म है संतोष धर्म, तप धर्म है ईश्वर भक्ति धर्म है तो धर्म अध्यात्म परक हो जाता है। जब हम कहते हैं कि स्वाध्याय धर्म है, ईश्वर नाम जप धर्म है, योग धर्म है, यज्ञ धर्म है, प्रार्थना करना धर्म है तो धर्म साधनापरक हो जाता है। वस्तुतः मानव मात्र के शारीरिक, मानसिक, आत्मिक प्रगति के जो उत्तम विधि-विधान एवं आदेश-उपदेश एवं कर्तव्य हैं वे सब धर्म के अन्तर्गत आते हैं। धर्म वह आचरणपरक विधा है जिसके धारण करने वाले को सम्यक ज्ञान, दर्शन, व्यवहार, एवं संयम सिखा देता है। परहित चिंतन एवं लोक कल्याण धर्म की भावना है। महान पुरुषों का उत्तम आचरण धर्म है। धर्म न रंगीन कपड़ों में मिलता, न माथे पर लगे विभिन्न रंग के छापा तिलक में, धर्म तो महापुरुष, सज्जन धर्मात्माओं के व्यवहार में मिलता है। धर्म मानवता की धुरी है, प्राण है जीवन संजीवनी है, जिसके बिना मनुष्य में मानवता का अभाव दिखता है। धर्मेण हीना पशुभिः समाना। वस्तुतः सत्य के अनुसार आचाण धर्म है। सुख का मूल धर्म है। जहां धर्म है वहीं ओज तेज, बल, जितेन्द्रिया, यश, ऐश्वर्य एवं जय है।

**क्वार्टर नं.-6-बी-493,**
**पो.-शक्तिनगर,**
**जि.-सोनभद्र (उ.प्र.) 231222**

## श्रद्धांजलि | स्पष्टवादी थे डॉ. सच्चिदानंद : वेदप्रकाश

- **सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के सर्वाधिक समय रहे महामंत्री**
- **रोम-रोम में बसा था गुरुकुल महाविद्यालय**

**डॉ. सुशील कुमार त्यागी**
ज्वालापुर, हरिद्वार।

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के पुरातन स्नातक तथा पूर्व मुख्याधिष्ठाता के पद को अलंकृत करने वाले आर्य समाज के मूर्धन्य विद्वान् डॉ0 सचिदानन्द शास्त्री का 31 अक्टूबर को प्रातः लखनऊ के एक अस्पताल में निधन हो गया। वे 77 वर्ष के थे।

दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिए तथा श्रद्धांजलि समर्पित करने के लिए गुरूकुल कांगडी विश्वविद्यालय के पूर्व आचार्य एवं उपकुलपति प्रो0 वेदप्रकाश शास्त्री की अध्यक्षता में गुरूकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में शोक सभा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर अध्यक्ष महोदय ने डॉ0 शास्त्री के जीवन पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि वे एक स्पष्टवादी व्यक्ति थे जो उचित हो वे निः संकोच एवं निर्भय होकर कह देते थे। उनका व्यक्तित्व अद्वितीय रहा। उन्होंने कहा कि वे सर्वाधिक समय तक सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा दिल्ली के महामंत्री रहे, इतने लम्बे समय तक इस सभा में महामंत्री पद को अलंकृत करने वाले एकमात्र शास्त्री जी ही थे। वे गुरूकुल महाविद्यालय ज्वालापुर संस्था के परम हितैषी थे, जिसका बखान करना कठिन है। उनका जीवन परार्थनिष्ठा का जीवन था। इनके रोम–रोम में गुरूकुल महाविद्यालय ज्वालापुर बसा था। इस विद्यालय का होनहार देदीप्यमान नक्षत्र एकाएक लुप्त हो गया। इस कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के मनोविज्ञान विभाग के पूर्व प्रो0 एवं विभागाध्यक्ष प्रो0 चन्द्रशेखर त्रिवेदी ने भी उनके जीवन पर प्रकाश डाला उन्होंने कहा कि मैं ऐसे सच्चरित्र व्यक्तित्व को जीवन में कभी भी नहीं भूल सकता। उन्होंने कहा कि यह तो विधि का विधान है कि जन्म–मरण का चक्र निरन्तर चलता रहता है। परन्तु व्यक्ति की कृतियां एवं सत्कर्म उसको अमरता प्रदान करने में सहायक होते हैं। उनके जीवन के छात्रहित एवं आर्यसमाज के हितकारी जैसे अनेक सत्कर्मों का प्रत्यक्षदृष्टा मैं स्वयं हूँ। मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित संस्था के कुलपति डॉ0 हरिगोपाल शास्त्री ने कहा कि वे चरित्रवान् व्यक्ति थे, वे स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी भी रहे। उन्होंने उत्तरप्रदेश में आर्य समाज के लिए बहुत कार्य किया। कुलपति जी ने कहा कि वे फक्कड़ स्वभाव के व्यक्ति, परन्तु उत्कृष्ट कोटि के विद्वान तथा हिन्दुत्व के प्रबल पोषक आर्य सेनानी थे। शास्त्री जी का देहान्त आर्य समाज, गुरूकुल एवं समस्त विदत्समाज के लिए बहुत बड़ी क्षति है।

संस्था के प्राचार्य डॉ0 केशव प्रसाद उपाध्याय ने भी डॉ0 सचिदानन्द जी को गम्भीर प्रकृति का व्यक्ति बताया। उन्होंने कहा कि वे चरित्रवान्, सिद्धान्तवादी तथा महाविद्यालय के हितचिन्तक थे। उनका वरदहस्त सदैव महाविद्यालय पर रहा। इस अवसर पर संस्था के कुलसचिव डॉ0 अजय कौशिक ने भी डॉ0 शास्त्री के संस्मरणों का व्याख्यान किया तथा भावभीनी श्रद्धांजलि समर्पित करते हुए कहा कि आर्यसमाज का कर्तव्य है कि उनके अतुलनीय योगदान को आर्य समाज सदैव स्मरण रखे।

इस अवसर पर महाविद्यालय के प्राध्यापक देवकीनन्दन शर्मा, डॉ0 विजय त्यागी, गोपीरमण झा, तथा सुरेश चरण पन्त, असीम कुमार, रजत बहुखण्डी आदि उपस्थित रहे।

## ऋषि ने गुरुदत्त को बनाया आस्तिक

**राजेन्द्र कुमार आर्य**
कोटा (राजस्थान)।

आर्य समाज द्वारा दीपावली व महर्षि दयानन्द निर्वाणोत्सव समारोह पूर्वक प्रताप नगर दादाबाडी में मनाया गया। विशेष यज्ञ जिसमें खील व बताशों से भी आहुतियाँ दी गयीं के उपरान्त जब डी0पी0 मिश्रा ने सुनाया "यूँ तो कितने ही महापुरूष हुए दुनियाँ में, कोई गुरूदेव दयानन्द सा देखा ना सुना"। तो श्रोता भावुक हो गये। प्रवक्ता राजेन्द्र आर्य पं0 शिव नारायण उपाध्याय ने प्रवचन करते हुए बताया कि महापुरूषों के जीवन से तो असंख्य लोगों के जीवन बदलते ही हैं, परन्तु उनकी मृत्यु भी कईयों के जीवन बदल देती है। महर्षि दयानन्द सरस्वती के मृत्यु दृश्य का सजीव चित्रण करते हुए बताया कि इसे देख नास्तिक गुरूदत्त आस्तिक बन गये व आर्य समाज व ऋषि दयानन्द के मिशन के प्रति पूर्णतः समर्पित हो गये। हाड़ौती की प्रसिद्ध भजन गायिका मृदुला सक्सेना ने भी 'अन्तिम देख विदाई ऋषि की, काल स्वयं अकुलाया' सुनाकर ऋषि को श्रद्धांजलि दी। प्रसाद वितरण व शान्ति पाठ के साथ समारोह का समापन हुआ।

**वृक्ष लगाकर पर्यावरण संरक्षण में अपना अमूल्य योगदान दें**

## सौरभ पीएच.डी. से अलंकृत

**मुरादाबाद।** सौरभ भारद्वाज को सी.एम.जे. विश्वविद्यालय, शिलांग ने पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग के अन्तर्गत पीएच.डी. की उपाधि से विभूषित किया है। श्री भारद्वाज ने अपना शोध प्रबन्ध 'स्वतंत्रता पूर्व एवं स्वातंत्र्योत्तर भारतीय प्रेस (-सूचना क्रान्ति के विशेष सन्दर्भ में एक अध्ययन)' विषय पर जे.एस. हिन्दू (पी.जी.) कॉलेज, अमरोहा में पत्रकारिता विभाग के समन्वयक डॉ. अशोक कुमार रुस्तगी (आर्य), एसोशिएट प्रोफेसर- राजनीति विज्ञान विभाग के निर्देशन में पूर्ण किया है।

सम्प्रति डॉ. भारद्वाज डी.ए.के. डिग्री कॉलेज, मुरादाबाद में पत्रकारिता विभाग में प्राध्यापक के रूप में कार्यरत् हैं तथा आर्यावर्त केसरी के भी संवाददाता हैं। आर्यावर्त परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

## दो चरणों में चला 28 दिवसीय वेद प्रचार अभियान

- **दो चरणों में चला वेद प्रचार अभियान**
- **प्रशंसनीय रही श्रद्धालुओं की उपस्थिति**

**रवि आर्य**
भिलाई।

आर्य समाज सेक्टर 6 भिलाई (छत्तीसगढ़) का 28 दिवसीय वेद प्रचार अभियान 2013 का आयोजन दो चरणो में आयोजित किया गया। प्रथम चरण श्रावणी पर्व से प्ररम्भ होकर जन्माष्टमी तक तथा द्वितीय चरण 1 से 20 अक्टूबर तक चला। इस आयोजन में भिलाई दुर्ग सिटी के विभिन्न इलाकों में पारिवारिक यज्ञ एवं सत्संग का कार्यक्रम हुआ। श्रद्धालुओं की उपस्थिति प्रशंसनीय थी। इस दौरान ख्याति प्राप्त उपदेशक आचार्य महावीर मुमुक्षु, मुरादाबाद से पं0 अमर सिंह, भजनोपदेशक वियावर, राजस्थान से एवं बिजनौर, उत्तर प्रदेश से पं0 भीष्म जी एवं पं0 टीकम सिंह 'मधुर' पधारे, इन्होंने अपने प्रवचनों एंव भजनों के माध्यम से वेद वाणी का प्रचार–प्रसार किया।

इस दौरान भिलाई इस्पात संयंत्र द्वारा संचालित सियान सदन में वृद्ध जनों के लिए भी एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में प्रधान अवनी भूषण पुरंग तथा मंत्री रवि आर्य का निरंतर सहयोग रहा।

## हार्दिक श्रद्धांजलि

## पत्रकार फरमूद के भाई नहीं रहे

अमरोहा। वरिष्ठ पत्रकार व आर्यावर्त केसरी के मुद्रण प्रभारी फरमूद सिद्दीकी के छोटे भाई नासिर अली सिद्दीकी (40) का लम्बी बीमारी के बाद 23 नवम्बंर को इन्तेकाल हो गया। इस दुखद घटना की जानकारी मिलते ही शहर के गणमान्य लोगों व पत्रकारों ने उनके निवास मौहल्ला दानिशमन्दान पहुंचकर परिजनों को ढांढस बंधाया। 24 नवम्बर को मरहूम नासिर अली को सुपुर्द-ए-खाक किया गया। आर्यावर्त केसरी परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि।

## ऋषि जन्मभूमि टंकारा यात्रा- २०१४

**आर्य उपप्रतिनिधि सभा, आर्यावर्त कॉलोनी, मुरादाबादी गेट, अमरोहा के तत्वावधान में महर्षि दयानन्द बोधोत्सव, टंकारा (गुजरात) यात्रा- २५ फरवरी से २ मार्च २०१४**

**प्रस्थान** : 25 फरवरी 2014 को प्रातः 7 बजे मुरादाबाद से आला हज़रत एक्सप्रेस 4311 अप। 24 फरवरी 2014 विश्राम एवं रात्रि भोजन, आर्य समाज मंदिर, गंज स्टेशन मार्ग, मुरादाबाद, दूरभाष- 09410065832 **वापसी** : 02 मार्च 2014 रात्रि अहमदाबाद मेल से देहली तक।

**: परिभ्रमण कार्यक्रम :**

**पोरबन्दर, द्वारिका, सोमनाथ मंदिर, सावरमती आश्रम, अहमदाबाद आदि दर्शनीय स्थल**

प्रस्थान से लेकर आगमन तक रेल–बस आरक्षण, भोजन, जलपान, आवास–निवास, परिभ्रमण की समुचित व्यवस्था उप सभा द्वारा होगी। **आप 3000/- रूपये का ड्राफ्ट आर्य उप प्रतिनिधि सभा ज्योतिबा फुले नगर, अमरोहा के नाम से खाते में भिजवा दें या कार्यालय अमरोहा को नकद हस्तगत कराकर रसीद प्राप्त कर लें। राशि 3000/- 31 दिसम्बर 2013 तक प्राप्त हो जानी चाहिए।** समुचित व्यवस्था में आपका सहयोग प्रार्थनीय।

**यात्रियों को आवश्यक निर्देश :-** ● गाड़ी के निर्धारित समय से आधा घंटा पूर्व सम्बन्धित रेलवे स्टेशन पर पहुंचना। ● यात्रा में कम से कम सामान साथ रखें, ● ओढ़ने, बिछाने की चादर, छोटी–थाली, गिलास, लोटा, कटोरी, मग्गा, पानी की बोतल, टॉर्च, चाकू, नोट बुक, पैन्सिल, मतदाता परिचय–पत्र, दैनिक आवश्यकता की वस्तुएं तौलिया, तहमद, शेविंग का सामान, तेल आदि। ● बहुमूल्य सामान साथ न रखें। ● अपनी औषधि साथ रखें। ● आवास या निकट के दूरभाष नम्बर कोड सहित अपना पूरा पता, आयु सहित भेजें। ● आप कब और कहां किस प्रकार पहुंच रहे हैं, सूचित करें। ● परिभ्रमण काल में आवास आर्यसमाज मंन्दिर, पोरबन्दर, अहमदाबाद में रहेगा। ● कार्यक्रम संयोजक को व्यवस्था परिवर्तन का अधिकार है। ● राशि व्यास्थापक श्री वीरेन्द्र कुमार जी आर्य, सरायतरीन के पास भी जमा की जा सकती है।

**आओ! ऋषि जन्मभूमि की यात्रा का कार्यक्रम बनाएं...**

**□ श्रीराम गुप्ता- संरक्षक, □ डॉ. अशोक कुमार आर्य- प्रधान (09412139333), □ डॉ. यतीन्द्र विद्यालंकार- मंत्री (09412634672), □ शिव चरन सिंह आर्य- कोषाध्यक्ष, □ नरेन्द्र कान्त गर्ग- संयोजक (09837809405), □ वीरेन्द्र कुमार आर्य- व्यवस्थापक (9927892665)**

# जीवन में सफलता प्राप्ति के कुछ रहस्य

**विश्व प्रसिद्ध कम्पनी एमडीएच के स्वामी आर्यरत्न महाशय धर्मपाल जी स्वयं में जीवन्तता की प्रतिमूर्ति हैं। उनकी जीवनगाथा भी अत्यन्त प्रेरक है। प्रस्तुत हैं उनके द्वारा सुझाये गये सफलता प्राप्ति के कुछ मूलमंत्र।**

इस दुनिया में तेज गति हमारे मन की होती है। अभी बैठे-बैठे हम रूस, अमरीका, चीन, जापान आदि देशों की यात्रा कर सकते हैं। पलक झपकते ही अपने मित्र या शत्रु का, या फिर किसी चर्चित हस्ती का दीदार कर सकते हैं। एक पल में मन अनगिनत बातें सोच सकता है। अनगिनत योजनाएं बना सकता है। भले ही हकीकत में कुछ भी हाथ न लग पाए, मन में अपने करोड़पति-अरबपति होने तक का ख्वाब मूर्तिमान होकर नाच उठता है। यहां इन सब बातों के जिक्र के पीछे मेरा मकसद यह जाहिर करना है कि हमारा मन बड़ा चंचल है। और यदि इस पर कड़ाई से लगाम न लगायी जाए, तो यह हमें रसातल में पहुंचा सकता है।

यह सभी के अनुभव की बात है कि जब हम अपनी बरकत पर विचार करते हैं, तो मन में तरह-तरह की योजनाओं का तानाबाना रचा जाने लगा है। ऐसी दशा में ज्यादातर लोग जीवन भर यह फैसला ही नहीं ले पाते कि उनकी मंजिल क्या है? और सारी भागदौड़ दो जून की रोटी जुटाने तक सिमट कर रह जाती है। ऐसे लोग न मान-प्रतिष्ठा बटोर पाते हैं, न ही उनकी अपनी स्थिति ही संतोषजनक कही जा सकती है।

कुछ लोग प्रैक्टिकल में बड़ी दिलचस्पी रखते हैं, और उनके निजी जीवन में भी ऐसा कुछ हमेशा चलता ही रहता है। कोई एक बिजनेस शुरु किया, अभी दो-चार कदम बढ़े ही कि उसे छोड़ दूसरे बिजनेस की नींव डाल दी। पहले बिजनेस की सारी पूंजी और मेहनत बेकार चली गयी। दूसरा बिजनेस अभी ठीक से पूरा भी नहीं हो पाया कि तीसरे की शुरुआत कर डाली। मेरा यह अपना अनुभव है कि ऐसे प्रैक्टिकल से जिन्दगी बोझ बन जाती है। इसलिए एक राह पर ही पूरे मन से दौड़ लगाएं, सफलता जरूर हासिल होगी।

दूसरी बात लक्ष्य पर विचार करते समय अपनी काबिलियत और अन्य सहूलियतों को भूलकर भी नजर अंदाज न करें, नहीं तो आप कभी भी कामयाब नहीं हो पाएंगे। कारण कि जिस क्षेत्र में आगे बढ़ने की तालीम हमने पायी है, या फिर परिवार में पुश्तैनी पेशे के रूप में जिस क्षेत्र को अपनाया गया हो, वह बड़ी जल्दी कामयाबी दिला देता है।

सन् 1947 में भारत विभाजन के बाद जब हम सियालकोट के पुश्तैनी कारोबार, मकान आदि को छोड़कर हमेशा के लिए दिल्ली आ गये, तो गुजर-बसर की समस्या सामने खड़ी हो गयी। हां, एक बात और थी कि उसके बाद का सारा समय मैंने अपने कारोबार की बारीकियां सीखने में बिताया था। कुछ दिनों तक तो मैंने इधर-उधर हाथ-पांव मारे, मगर मन बार-बार पुश्तैनी कारोबार पर ही जाकर टिकता था। आखिरकार मैंने नये जोश के साथ एक बार फिर एमडीएच मसालों का व्यापार शुरु किया, जो आज विश्वस्तर पर अपनी पहचान कायम कर चुका है। लक्ष्य हासिल करने के लिए मुख्यत: निम्न सुझावों पर ध्यान दें-

- अपनी क्षमता को देखते हुए ही लक्ष्य का चुनाव करें।
- संकल्प को कमजोर न होने दें।
- असफलताओं से घबराएं नहीं, बल्कि सबक लें।
- दुर्गुणों से दूर रहें और सद्गुण अपनाएं।
- सच्चे मित्रों की सलाह लें, और जरूरत के मुताबिक सहयोग मांगने में भी संकोच न करें।
- गलत लोगों से दूर रहें।
- मन में अहंकार न आने दें।
- ध्यान रहे, आपका लक्ष्य समाज के हित में हो। लक्ष्य पूरा करने के लिए जी-तोड़ मेहनत करें।
- बार-बार लक्ष्य न बदलें, बल्कि एक लक्ष्य को साधने की कोशिश करें।

उपरोक्त बातों का ध्यान रखने से मनचाहे परिणाम सामने आते हैं, और जीवन सफलता की सुगन्ध से महक उठता है।

## काकोरी केस के अमर शहीदों को शत् शत् नमन्

राम प्रसाद बिस्मिल

अशफाक उल्ला खां

ठा. रोशन सिंह

राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी

## आर्यावर्त केसरी द्वारा नव संवत्सर एवं

आर्यसमाज स्थापना दिवस के शुभ अवसर पर

## वर्षगांठ स्मारिका

इस विशेषांक हेतु रचनाएं, शुभकामनाएं व विज्ञापन सादर आमंत्रित हैं। अपनी प्रतियां अभी से बुक कराएं।

## माता लीलावती आर्यभिक्षु परोपकारिणी न्यास

**आर्य वानप्रस्थ आश्रम, ज्वालापुर, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)**

**प्रस्ताव (आवेदन) आमंत्रित हैं**

न्यास प्रतिवर्ष महात्मा आर्यभिक्षु (स्वामी आत्मबोध सरस्वती) के दीक्षा दिवस (जन्म दिवस) पर आर्य विद्वानों को सम्मानित करता है। इस वर्ष भी 31 जनवरी 2014 को सम्मानित किये जाने वाले वैदिक विद्वानों एवं कार्यकर्ताओं के चयन हेतु हिन्दी में निम्न प्रकार प्रस्ताव आमंत्रित हैं-

1. स्वामी धर्मानन्द विद्यामार्तण्ड आर्यभिक्षु पुरस्कार (आर्य विद्वान के लिए)
2. ब्र. अखिलानन्द आर्यभिक्षु पुरस्कार (नैष्ठिक ब्रह्मचारी के लिए)
3. स्वामी आत्मबोध सरस्वती कर्मवीर पुरस्कार (श्रेष्ठ आर्य कार्यकर्ता के लिए)

प्रथम व द्वितीय पुरस्कार सामान्य: उन विद्वानों, ब्रह्मचारियों को प्रदान किये जाते हैं जिनकी कोई निश्चित आय नहीं होती। तृतीय पुरस्कार के लिए ऐसी कोई शर्त नहीं हैं। प्रत्येक पुरस्कार राशि रुपये 11,000/- (ग्यारह हजार मात्र) हैं।

उपर्युक्त पुरस्कारों के लिए 31 दिसम्बर 2013 तक प्रस्ताव (आवेदन) प्रधान अथवा मंत्री, न्यास के नाम से, सम्पूर्ण विवरण-शैक्षिक योग्यता, लेखन, प्रचार कार्य, जनहित में योगदान, दो फोटों आदि के साथ अपने दूरभाष (चल) एवं पूर्ण पते सहित भेजने का कष्ट करें।

देवराज आर्य, मंत्री (09997070789)

## आज़ ही मंगाएं : 'ऋषि अर्पण'

**महर्षि दयानन्द के जीवन के दुर्लभ प्रसंगों तथा महत्वपूर्ण फोटो युक्त एक संग्रहणीय पुस्तक**

लेखक- अभिमन्यु कुमार खुल्लर
२२, नगर निगम क्वार्टर्स,
जीवाजी गंज, लश्कर,
ग्वालियर-४७४००१ (म.प्र.)
फोन- 0751-2425931,
09303448441

विक्रय मूल्य रुपये १२५/-
(डाक व्यय सहित)

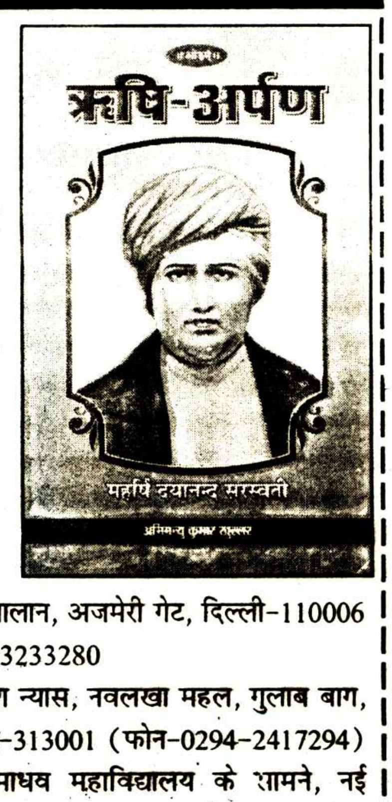


: पुस्तक प्राप्ति स्थल :

1. आर्य प्रकाशन, 814, कुण्डेवालान, अजमेरी गेट, दिल्ली-110006 फोन- 011-23213280, 23233280
2. श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 (फोन-0294-2417294)
3. राष्ट्रीय साहित्य भण्डार, माधव महाविद्यालय के सामने, नई सड़क, लश्कर, ग्वालियर-474001 (म.प्र.) (09425109685)

## सत्यार्थ प्रकाश मानक संस्करण की कतिपय विशेषताएं

- धर्मार्य सभा के प्रधान आचार्य विशुद्धानन्द जी मिश्र के नेतृत्व में दस विद्वानों की समिति द्वारा तैयार।
- पाठभेद की समस्या का सदैव के लिए निराकरण। मुद्रण भूलों का निराकरण कर परिशिष्ट में आधार की जानकारी भी।
- मानक संस्करण का प्रत्येक पृष्ठ उसी शब्द से प्रारम्भ व समाप्त है जैसा कि मूल सत्यार्थ प्रकाश (१८८४) में है।
- मूल सत्यार्थ प्रकाश (१८८४) सदैव के लिए पाठक के समक्ष उपस्थित रहेगा।
- सुन्दर गेटअप '५.६X९.०' पृष्ठ ६५०, वजन ६०० ग्राम, पेपर बैक।

**अब मात्र आधी कीमत में ₹ ४०/-**
शीघ्र मगवाएँ

**घाटे की पूर्ति पूर्ववत् दानदाताओं के सहयोग से ही संभव होगी।**
**आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास है कि सत्यार्थ प्रकाश प्रेमी इस कार्य में आगे आवेंगे। आज ही अपना आर्डर बुक कराएं और सत्यार्थ प्रकाश पाएं।**

**श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास**

नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 (राज०)
मोबा.: 09314235101 (कार्यकारी अध्यक्ष), 09829063110 (व्यवस्थापक)

# वेदों से ही फैला संसार में ज्ञान का प्रकाश

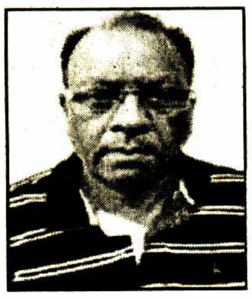

मनमोहन कुमार आर्य

सत्यार्थ प्रकाश के सप्तम् समुल्लास में महर्षि दयानन्द वेद की उत्पत्ति के प्रकरण में लिखते हैं - 'इस प्रकार जो परमात्मा उन आदि सृष्टि के ऋषियों को वेदविद्या न पढ़ाता और वे अन्य को न पढ़ाते तो सब लोग अविद्वान ही रह जाते। जब तक आर्यावर्त देश से शिक्षा नहीं गई थी तब तक मिस्र, यूनान और यूरोप देश आदिस्थ मनुष्यों में कुछ भी विद्या नहीं हुई थी और इंगलैण्ड के कुलुम्बस आदि पुरुष अमेरिका में जब तक नहीं गये थे तब तक वे भी सहस्रों, लाखों, करोड़ों वर्षों से मूर्ख अर्थात् विद्याहीन थे। पुनः सुशिक्षा के पाने से विद्वान हो गये हैं। वैसे ही परमात्मा से सृष्टि की आदि में विद्या-शिक्षा की प्राप्ति से उत्तरोत्तर काल में विद्वान होते आये।'

यजुर्वेद के व्याख्यान शतपथ ब्राह्मण एवं महर्षि दयानन्द की मान्यता के अनुसार सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, निराकार, सर्वव्यापक, सर्वान्तरयामी ईश्वर ने सृष्टि के आरम्भ में चार ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा को क्रमशः ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद व अथर्ववेद पढ़ाये थे, यदि वह उन्हें वेद विद्या न पढ़ाता तथा वह चार ऋषिगण ब्रह्मादि अन्यों को न पढ़ाते तो संसार के सब लोग अविद्वान ही रह जाते। महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में यह बात लिखकर विद्वान व सामान्य सभी व्यक्तियों के प्रति बहुत उपकार किया है। यदि वह यह न लिखते तो विद्वानों को भारी परिश्रम करना पड़ता और अन्य किसी विद्वान द्वारा इंगित एतद् विषयक उद्धरण का महत्व इतना प्रामाणिक न होता जितना कि महर्षि द्वारा लिखे गये शब्दों का है। ऐसा इसलिए कि महर्षि दयानन्द ने लगभग 3000 ग्रन्थों को प्रमाणिक माना है। उन्होंने इस प्रकरण को अन्यत्र भी पढ़ा होगा। इस प्रमाण के विरूद्ध भी कुछ उद्धरण व उल्लेख उनकी दृष्टि में आये होंगे और उन सब पर चिन्तन-मनन करके विवेक से उन्होंने निर्णय किया। प्रतिदिन समाधिस्थ होने की योग्यता भी महर्षि दयानन्द में थी ही, इसका ज्ञान उनके जीवन के अध्येयताओं को है। यहां यह विचारणीय है कि यदि ईश्वर ने चार ऋषियों को वेदों का ज्ञान न दिया होता तो क्या सृष्टि की आदि में ईश्वर द्वारा उत्पन्न किए मनुष्य अपने जीवनयापन व धर्म अधर्म, सत्य-असत्य, ईश्वर, जीवात्मा, कारण प्रकृति व कार्य प्रकृति आदि का यथार्थ ज्ञान प्राप्त कर सकते थे? हमारा चिन्तन, विचार, स्वाध्याय-अध्ययन आदि से निष्कर्ष निकलता है कि ईश्वर यदि वेदों का ज्ञान व वैदिक संस्कृत भाषा, आदि सृष्टि में ऋषियों व मनुष्यों को न देता तो वह न तो भाषा ही बना सकते थे, ज्ञान तो उत्पन्न होना सर्वथा असम्भव नहीं था। अतः सृष्टि की आदि में ईश्वर द्वारा वैदिक संस्कृत भाषा के साथ वेदों का ज्ञान देना अपरिहार्य है अन्यथा सृष्टि आगे चल नहीं सकती थी। आर्य समाज में यह तो निर्विवाद है कि ईश्वर ने आदि चार ऋषियों को एक-एक वेद का ज्ञान दिया और उन्होंने उन-उन वेदों का ज्ञान ब्रह्माजी को कराया। वैदिक संस्कृत भाषा के ज्ञान के बारे में स्थिति स्पष्ट नहीं है। ईश्वर ने भाषा का ज्ञान क्या केवल चार ऋषियों को ही दिया या अमैथुनी सृष्टि के अन्य सभी स्त्री पुरूषों को दिया, इस विषय में स्पष्ट लेख या प्रमाण उपलब्ध नहीं है। हमारा अनुमान है कि ईश्वर ने भाषा का ज्ञान अमैथुनी सृष्टि के सभी स्त्री पुरूषों को दिया था।

इसके विपरीत कुछ व अनेक विद्वानों का यह मत भी हो सकता है कि आरम्भ में अन्य सभी स्त्री-पुरूषों ने भाषा ब्रह्मादि ऋषियों से सीखी थी। हमारा चिन्तन यह बताता है कि यदि ईश्वर अन्य सभी मनुष्यों को बोल-चाल की भाषा का ज्ञान उनके हृदयों में अपने अन्तरयामी स्वरूप से न कराता तो जितना समय ब्रह्मा-अग्नि-वायु-आदित्य-अंगिरा को अन्यों को पढ़ाने में लगता, तब तक, भाषा न जानने के कारण मनुष्यों को जीवनयापन में जो कठिनाईयां आतीं, उससे उनका जीवन कठिनतर व असम्भव सा हो जाता। हम संसार मे देखते हैं कि सन्तान का जन्म होने पर माता-पिता को शिशु की बहुत अधिक देखभाल करनी होती है। इसके बावजूद भी बच्चे कई बार रोगी हो जाते हैं। माता-पिता उनकी चिकित्सा कर व उन्हें औषध सेवन व उपयुक्त भोजन कराकर स्वस्थ करते हैं। आदि सभी मनुष्यों को भा-ा का ज्ञान पहले ही दिन नहीं मिलेगा तो वह परस्पर अपना व्यवहार नहीं कर सकेगें। भाषा के अभाव में उन्हें यह भी ज्ञान नहीं हो सकता कि उन्हें क्या खाना है, क्या नहीं। उन्हें बताने वाला चाहिये और उसके लिए भी बताने वाले की भाषा समझने के लिए सभी को भाषा का ज्ञान होना चाहिये। इस विषय में हमारा कोई भी पूर्वाग्रह नहीं है। हम सत्य को स्वीकार करने के लिए प्रतिक्षण प्रस्तुत हैं। यदि विद्वान हमारे विचारों से सहमत न हों तो हम उनके युक्तिपूर्ण विचारों को सहर्ष स्वीकार करने के लिए तत्पर हैं।

भाषा ज्ञान का दूसरा जो पक्ष है वहां पहली समस्या तो यह है कि यह चारों ऋषि पहले ब्रह्माजी को भाषा का ज्ञान कराते और उसके बाद वह एक-एक करके एक-एक वेद का ज्ञान ब्रह्माजी को देते। उसके बाद ही इन्हें अन्य मनुष्यों को भाषा आदि पढ़ाने का अवकाश मिलता। भाषा सिखाने में कई दिन या महीने लग सकते थे।

इस बीच सभी मनुष्यों का सभी प्रकार का व्यवहार ठप्प सा रहता। यहां इस समस्या का समाधान यही निकलता है कि ईश्वर सर्वशक्तिमान है अतः वह आदि सभी मनुष्यों को काम चलाने के लिए बोलचाल की भाषा का ज्ञान तो अवश्य ही देता है अन्यथा उनका जीवनयापन सामान्य रूप से नहीं चल सकता था। इसका प्रमाण यह है कि परमात्मा ने मनुष्य की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए ही यह संसार बनाया है। अपने ज्ञान के अनुसार ही ईश्वर ने मनुष्य के शरीर में मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार, पांच ज्ञानेन्द्रियां व पांच कर्मेन्द्रियां एवं अन्य अवयव व उपकरण बनायें हैं। वाक् इन्द्रिय भी उनमें से एक है। इस वाक् इन्द्रिय को सार्थकता प्रदान करने के लिए भाषा की आवश्यकता है। ईश्वर भाषा को प्रदान करने का सारा भार आदि ऋषियों पर डालता है, इसका कोई प्रमाण नहीं है, अतः परिस्थितियों के अनुसार यह स्वीकार करना पड़ता है कि ईश्वर सभी आदि मनुष्यों को भाषा का ज्ञान भी देता है जिससे उनका दैनन्दिन व्यवहार चल गया होगा। उसके बाद वेदों का ज्ञान सभी मनुष्यों को प्रदान करने की प्रक्रिया आरम्भ हुई होगी। उसके अन्तर्गत पहले चार ऋषियों ने ब्रह्मा जी को, ईश्वर की प्रेरणा से, ज्ञान दिया होगा। फिर पांचों ऋषियों ने अन्य सभी मनुष्यों को चार वेदों का ज्ञान उनकी बौद्धिक व शारीरिक क्षमता के अनुसार कराया होगा। इससे महर्षि दयानन्द के सत्यार्थ प्रकाश में लिखे इन वचनों की, कि जो परमात्मा उन आदि सृष्टि के ऋषियों को वेदविद्या न पढ़ाता और वे अन्य को न पढ़ाते तो सब लोग अविद्वान ही रह जाते, का समाधान होता है।

अब दूसरे भाग में हम महर्षि दयानन्द के शब्दों, "जब तक आर्यावर्त देश से शिक्षा नहीं गई थी तब तक मिस्र, यूनान और यूरोप देश आदिस्थ मनुष्यों में कुछ भी विद्या नहीं हुई थी और इंगलैण्ड के कुलुम्बस आदि पुरूष अमेरिका में जब तक नहीं गये थे तब तक वे भी सहस्रों, लाखों, करोड़ों वर्षों से मूर्ख अर्थात् विद्याहीन थे। पुनः सुशिक्षा के पाने से विद्वान हो गये हैं। वैसे ही परमात्मा से सृष्टि की आदि में विद्या-शिक्षा की प्राप्ति से उत्तरोत्तर काल में विद्वान होते आये।", पर विचार करते हैं। महर्षि दयानन्द के इन शब्दों से विदित होता है कि मिस्र, यूनान और यूरोप आदि देशों के सभी निवासी तब तक विद्याहीन थे जब तक आर्यावर्त से वहां विद्या नहीं गई थी। इन देशों में आर्यावर्त से विद्या कब गई इसका वर्णन सम्भवतः कहीं नही मिलता। इसके लिए हमें ऊहा से काम लेना होगा। हमारी पृथ्वी का परिमाण सृष्टि की आदि में बनने से आज तक एक समान है या इसके क्षेत्रफल में बहुत मामूली अन्तर हुआ होगा। आदि सृष्टि एक ऊंचे स्थान तिब्बत में व उसके समीप हुई थी।

इन्हें ईश्वर से वेदों का ज्ञान मिला और उसके बाद समय व्यतीत होता रहा। कुछ 8 या 10 पीढ़ियां बीतने, इससे पूर्व या पश्चात, इनमें कुछ में परस्पर विवाद आदि हुए होगें। उस समय सारी पृथ्वी खाली पड़ी थी, अतः कुछ लोग यत्र-तत्र पारायण करने लगे और भिन्न स्थानों पर रहने लगे और वहां की संख्या बढ़ने लगी। उसके बाद, कुछ पीढ़ियों के बाद, उनमें भी परस्पर कलह हुई होगी जिससे कुछ शान्तिप्रिय लोग वहां से दूर चले गये, क्योंकि पृथ्वी अन्यत्र मनु-यों से शून्य थी। इस प्रकार से चलते-चलते सैकड़ों, हजारों व लाखों वर्षों में मिस्र, यूनान व यूरोप के देश अस्तित्व में आये। वैदिक साहित्य में वर्णन आता है कि आर्यावर्त से भिन्न देशों में माण्डलिक राजा हुआ करते थे। आर्यावर्त के राजा चक्रवर्ती सम्राट रहे हैं। माण्डलिक राजा हमारे देश के चक्रवर्ती राजाओं को कर आदि दिया करते थे और बदले में हमारे देश के राजा वहां शिक्षा, सुरक्षा, न्याय आदि की व्यवस्था करते थे। स्वभाविक है कि सभी देशों के माण्डलिक राजा व निवासी आर्यावर्त व भारत में आते-जाते भी रहते थे। अतः शिक्षा का आदान प्रदान आपस में चलता था। जिस प्रकार भारत में वैदिक ज्ञान था, उसी प्रकार से भारत से बाहर के देशों में भी वैदिक ज्ञान रहा होगा। वहां भी कुछ ऋषि-मुनि व विद्वान, भले ही संख्या कम रही हो, रहे होगें, सभी देशों में संस्कृत भी रही होगी और वहां की अन्य भाषायें यथा मिस्री, यूनानी, ग्रीक, लैटिन, फ्रैंच आदि भी रही होगीं। संसार के सभी देशों में भारत के माण्डलिक राजा रहे और भारत से उनका सम्पर्क बना रहा होगा और उनकी समस्याओं में भारत से सहायता व सहयोग होता रहा होगा। लगभग 5,000 वर्ष पूर्व महाभारत युद्ध में जो भारी क्षति हुई उसके परिणामस्वरूप आर्यावर्त भारत के साथ दुनिया के सभी देशों के सम्बन्ध क्षीण पड़ गये और भारत का उन सभी देशों में और वहां के देशों के लोगों का भारत आना-जाना अवरूद्ध हो गया। भारत में ज्ञान निरन्तर घटता रहा और इसके परिणामस्वरूप अज्ञान, पाखण्ड, कुरीतियां बढ़ते रहे। इसी प्रकार अन्य देशों में न्यूनाधिक हुआ।

महाभारत का युद्ध भारत की भूमि पर हुआ अतः यहां विध्वंश सर्वाधिक हुआ। अन्य देशों में इस युद्ध के कारण कुछ भौतिक विध्वंश नहीं हुआ। परन्तु भारत से ज्ञान, व्यापार व अन्य प्रकार की सहायता व सहयोग अवरूद्ध होने से वहां भी समय के साथ प्रगति के स्थान पर अवनति होती गई। कारण यह लगता है कि भारत से जो सहायता व सहयोग उन्हें मिलता था, वह बन्द हो गया। विगत 5,000 वर्षों में भारत सहित दुनियां के सभी देशों में अनेकानेक महापुरूषों ने जन्म लिया और समाज व देश के उत्थान का कार्य किया। अनेक विचारधारायें एवं मत अस्तित्व में आये। परन्तु हम देखते हैं कि यह सभी एकांगी, अपूर्ण एवं सत्य व असत्य का मिश्रण हैं। ऐसा होना स्वाभाविक है। हम विज्ञान के क्षेत्र में भी देखते हैं कि वहां आरम्भ में जो कल्पनायें, थ्योरियां व सिद्धान्त बने वह समय-समय पर संशोधित होते रहे। इससे एक लाभ यह हुआ कि आज विज्ञान के जो सिद्धान्त स्थिर हुए हैं, उनसे हमने कम्प्यूटर, वायुयान, रेलगाड़ी, जलपोत व समुद्री जहाज, भिन्न-भिन्न प्रकार के मोबाइल फोन, कारें, चिकित्सा पद्धतियां, ओषधियों का ज्ञान, शल्य क्रिया का विशद ज्ञान, भवन निर्माण कला में प्रगति आदि नाना प्रकार की उन्नति की है। यदि विज्ञान की भांति हम मत, सम्प्रदाय या भिन्न-भिन्न नाम-नामी धर्मों में भी संशोधन, परिवर्धन व उनकी प्रासंगिकता व अप्रासंगिकता पर ध्यान देते तो आज धर्म संज्ञक संगठन या संस्था सारे विश्व में केवल एक ही होती और उसमें विज्ञान की भांति बहुत उन्नति होती और सारा विश्व सुख व शान्ति का धाम बन गया होता। परन्तु मत व धर्म के क्षेत्र में ऐसा नहीं हो सका जिस कारण हम आज से 3 या 4 हजार वर्ष पूर्व जहां थे, वहीं हैं अथवा उससे भी पीछे हटे हैं।

हमने सत्यार्थ प्रकाश आदि ग्रन्थों का जो अध्ययन किया है उसके अनुसार महाभारत काल तक सारे विश्व में केवल वैदिक मत या धर्म ही प्रचलित था। भारत के क्षत्रिय राजा व वैश्य, विश्व के सभी देशों में आते-जाते थे और अपना सामान बेचते व अदला-बदली exchange करते थे। हमारी वस्तुयें दूसरों देशों में जाती थीं और वहां से उनकी वस्तुयें हमारे देश में आती थीं। अतः हमारे देश का ज्ञान भी महाभारत काल तक व उससे कुछ समय पूर्व तक विश्व के सभी देशों में जाता रहा और वहां वैदिक धर्म का भारत से कुछ कम परन्तु प्रचार अवश्य रहा। यदि वहां धर्म का प्रचार रहा और हमारे राजा-राजपुरूष व वैश्य-व्यापारी वहां जाते थे, हम चक्रवर्ती राजा थे और वहां के माण्डलिक राजा हमें कर देते थे, हम उनकी सहायता व सहयोग करते थे, तो कोई कारण नहीं कि वहां वैदिक धर्म का प्रचार न रहा हो और वहां के लोग भी विद्यावान् न रहे हों। महाभारत काल के बाद अवश्य ही वहां भी विद्या का कहीं अधिक व कहीं कम ह्रास हुआ। अमेरिका क्योंकि सबसे दूर था, अतः वहां ह्रास की

शेष पृष्ठ- 10 पर

## पृ.-९ का शेष- वेदों से ही फैला..

मात्रा अथवा परिमाण अधिकतम् माना जा सकता है। कुलुम्बस (जन्मः 31-10-1451 ई., मृत्युः 20-5-1506 ई., जन्म स्थानः जीनोआ, ईटली, मृत्यु स्थानः वालाडोलिड, स्पेन, अमेरिका की खोज की वर्षः 1492 ई.) के पहुचनें तक वहां धर्म व संस्कृति का ह्रास चरम पर था और वहां देखा गया कि लोग नग्न अवस्था में भी रहते थे। परन्तु यह समझ में नहीं आता कि करोड़ों वर्षो से वहां के लोग विद्याहीन व मूर्ख थे जबकि महाभारत का युद्ध तो आज से लगभग 5,000 वर्ष पूर्व ही हुआ था और कुलुम्बस के अमेरिका पहुंचने से पूर्व लगभग 4000-4500 वर्ष का अधिकतम समय उनके विद्याहीन होने का हो सकता है। हम समझते हैं कि आर्य समाज के विद्वानों को इस प्रश्न पर विचार कर सभी आर्यजनों का मार्गदर्शन करना चाहिये। महर्षि दयानन्द के शब्दों को एक बार पुनः पढ़कर संगति लगाते हैं। महर्षि लिखते हैं कि जब तक आर्यावर्त देश से शिक्षा नहीं गई थी तब तक मिस्र, यूनान और यूरोप देश आदिस्थ मनुष्यों में कुछ भी विद्या नहीं हुई थी। यह शाश्वत् वाक्य है और पूर्ण सत्य हैं। संसार भी इस तथ्य को स्वीकार करता है कि ज्ञान व विद्या का आविर्भाव आर्यावर्त में हुआ। वेदों का प्रकाश जो कि ज्ञान की पुस्तके हैं, यह विकास डारविन के सिद्धान्त के अनुसार न होकर सीधे परमेश्वर से चार आदि ऋषियों में हुआ था। ईश्वर, जीव व कारण प्रकृति के अनादित्व व नित्यता को जानने से ईश्वर से वेदों की उत्पत्ति का सिद्धान्त समझ में आ जाता है। विदेशी इसे जानने का प्रयास नहीं करते या फिर उनकों कुछ वेदों व भारतीय विद्या के प्रति पूर्वाग्रह के होने के कारण वह जानकर भी इसको स्वीकार नहीं करना चाहते। विदेशी विद्वानों ने वेद को संसार की सबसे पुरानी पुस्तक स्वीकार कर लिया है। इससे यह निष्कर्ष भी निकलता है कि पुस्तक के अस्तित्व में आने से पूर्व भी वेद में निहित ज्ञान, श्रुति-श्रवण-ज्ञान की तरह, आर्यावर्त में जो भारत का प्राचीन नाम है, विद्यमान था। यदि ईश्वर से वेदों का ज्ञान प्राप्त न होता तो आर्यावर्त के मनुष्य, जो अमैथुनी सृष्टि मे उत्पन्न हुए थे, वह स्वप्रयत्नों से ज्ञान व विद्या को उत्पन्न नहीं कर सकते थे। अतः ईश्वर से अर्थ अर्थात् भाषा सहित प्राप्त चारों वेदों का आदि ऋषियों व ब्रह्माजी आदि ऋषियों ने पठन-पाठन आरम्भ किया, अन्य सभी स्त्री-पुरूषों को पढ़ाया और समय के साथ-साथ वेदों का यह ज्ञान सर्वत्र फैलता रहा। अन्य देशों में ईश्वर से ज्ञान न मिलने के कारण वह वहां उत्पन्न नहीं हुआ।

उसे उन्होंने प्राचीन भारत, आर्यावर्त से प्राप्त किया। यदि आस-पास के कुछ गांवों में जल का एक स्रोत किसी एक गांव में एक ही स्थान पर हो तो उन सब गांवों के लोगों को जल की उपलब्धता के लिए उसी स्रोत पर निर्भर होना होगा, ऐसा ही कुछ वेदों के ज्ञान के विश्व में प्रसार पर भी लागू होता है। वेदों का ज्ञान केवल भारत में ही उपलब्ध था अतः सारे विश्व को इसके लिए भारत पर आश्रित होना पड़ा। यह एक ऐतिहासिक तथ्य है कि इटली में जन्में कुलुम्बस आदि पुरूष अमेरिका में जब तक नहीं गये थे तब तक वहां के लोग भी लम्बे समय से मूर्ख अर्थात् विद्याहीन थे। हमें लगता है कि यह लम्बी अवधि महाभारत काल के लगभग एक सौ या इससे कुछ अधिक वर्षो बाद से आरम्भ होनी चाहिये। लाखों या करोड़ों वर्ष कहने से यह अर्थ निकलता है कि महाभारत काल व उससे पूर्व तक आर्यावर्त के लोग कभी वहां गये ही नही थे। ऐसा महर्षि के अन्यत्र उद्धृत वचनों के विपरीत है। महाभारत के अर्जुन तो अमेरिका में आते-जाते रहे थे और वहां की उलोपी कन्या से उनका विवाह भी हुआ था। इसके आधार पर व अन्य कथनों के आधार पर ऐसा प्रतीत होता है कि हमारे देश के क्षत्रिय राजपुरूष व व्यापारी-वैश्य संसार के सभी देशों में आया जाया करते थे। महाभारत के बाद अमेरिका के लोग विद्याविहीन हो गये थे जैसा कि कुलुम्बस के जाने पर यह तथ्य सामने आया। पुनः कुलुम्बस के बाद अन्य देशों से वहां विद्या पहुंचने के बाद वह शिक्षित हुए। जो विद्या, जिन देशों से अमेरिका पहुंची, उन व उन देशों में जिन देशों से विद्या पहुंची थी, उन सभी देशों में भारत से विद्या पहुंची थी। इसके बाद सुशिक्षा होने अर्थात् आधारभूत शिक्षा मिल जाने और उसमें वृद्धि कर सभी दूरस्थ देशों के लोग विद्वान हो गये। यह इसी प्रकार से हुआ कि जिस प्रकार आर्यावर्त्त में आदि काल में परमात्मा से वेदों का ज्ञान प्राप्त होने के पश्चात् उत्तरोत्तर काल में भारत व अन्यत्र विद्वान होते चले आये हैं। इस प्रकरण में हम आर्य विद्वानों के मार्गदर्शन व प्रतिक्रियाओं का स्वागत करेंगे।

सम्पर्कः 196/261 चुक्खूवाला-2, देहरादून-248001
email: manmohanarya@gmail.com

## पञ्च महायज्ञ

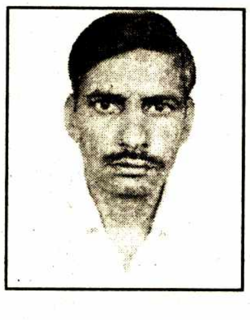

सुमन कुमार 'वैदिक'

हमारे वैदिक साहित्य में पञ्च महायज्ञों का वर्णन आता है। इन्हीं पञ्च यज्ञों को महायज्ञ कहा गया है, अन्य को नहीं। इनका चयन ऋषि मुनियों ने मानव के लिए सृष्टि के प्रारम्भ में ही किया।

**ब्रह्मयज्ञ :-** ब्रह्मयज्ञ का अभिप्राय है ब्रह्म का चिन्तन। प्रातः सायं ब्रह्म की आभा को, ब्रह्म की सृष्टि को जानना। और अपने में निहित करना। ऐसा साधक कहीं समाधिस्थ हो जाता है और कहीं जनता में जनार्दन को स्वीकार करके कण-कण में प्रभु का दिग्दर्शन करता है। ब्रह्म सर्वश्रेष्ठ यज्ञ कहलाता है। ब्रह्म कहते हैं परमात्मा को और यज्ञ कहते हैं श्रेष्ठ कर्म को, संसार की रचना को। सृष्टि की रचना के प्रारम्भ में परमात्मा स्वयं ब्रह्म बनते हैं। आत्मा यजमान और पञ्च महाभूत होता बनते हैं। आत्मा परमात्मा की यज्ञशाला में विराजमान हो कितना सुन्दर यज्ञमान बन यज्ञ कर रहा है। संसार में अनुसंधान कर कभी आध्यात्मिकवाद कभी भौतिकवाद में रूपावेश हो जाता है।

**देवपूजा :-** हमारे यहां दो प्रकार के देवता कहलाते हैं, एक जड़ जो पञ्चमहाभूत है। दूसरे देवता जिसे हमारे यहां चेतन देवता कहते हैं जिसे हम पुरोहित भी कहते हैं जो ब्रह्म के निकट है। यज्ञशाला में उससे यजमान कहता है कि पुरोहित आकर मेरे यज्ञ को पूर्ण करो। पुरोहितों द्वारा यज्ञ होता है। देवपूजा या देव यज्ञ का अभिप्राय है। अच्छाईयों में परिणत होना। धर्म के मर्म को जानना, पूजा का अर्थ है सदुपयोग। सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र हमारे देवता हैं। यह देते रहते हैं। सूर्य हमें जीवन, तेज, ओज, पृथ्वी सुगन्धि, जल अमृत और रस वायु प्राण, अन्तरिक्ष शब्द देकर कितना सुन्दर यज्ञ करता है। राम, कृष्ण राजा जनक, युधिष्ठर सभी प्रातः काल में यज्ञ करते आये हैं। देवयज्ञ करना हमारा कर्तव्य है। हम जितना लेते हैं दुर्गन्धि करते हैं उसके बदले सुगन्धि दे। यही यज्ञ है। हमारी वाणी मधुर हो, हम तेजस्वी बनें, हमारा अन्तरिक्ष ऊँचा बनें अर्थात् चिन्तन उच्च हो।

**अतिथि यज्ञ :-** तृतीय यज्ञ अतिथि यज्ञ है। जिसके आगमन की तिथि निश्चित न हो और जब कोई हमारे गृह में आये तो वही अतिथि कहलाते हैं। उनकी उदर पूर्ति कराना अतिथि यज्ञ कहलाता है। पुण्यवानों के गृहों में ही बुद्धिमान अतिथि आते रहते हैं और अपने शब्दों के चित्रों को गृह में त्याग देते हैं और उनसे यजमान कहता है कि अतिथि मेरे गृह के साकल्प को पान कर अपने पुण्य को मुझे दे। अतिथि यज्ञमान के हृदय की आभा को अपने समीप ले हृदय में प्रसन्नता को मुक्त कर देता है।

**बलिवैश्व यज्ञ :-** कुछ प्राणी अपने जीवन में सुगन्धि देते हुए हमारे लिए अपने प्राणों को भी न्यौछावर कर देते हैं। उन प्राणियों को देना भी हमारा कर्तव्य है यही चतुर्थ यज्ञ बलिवैश्व यज्ञ कहलाता है। अग्नि में भी दी आहूति हव्य बन करके प्राणियों को प्रदान करा देती है।

**पितृयज्ञ या भूतयज्ञ :-** पुरोहित जन, महापुरूष, माता-पिता इनका पूजन करना अर्थात् उनकी यथोचित सेवा और इच्छाओं की पूर्ति करना हमारे यहां पितृ यज्ञ कहलाता है। माता-पिता, राजा, आचार्य, परमात्मा, अग्नि, सूर्य, वायु, अन्तरिक्ष और यज्ञ सभी पितर कहलाते हैं। पितर का अभिप्राय जिनसे हमारी रक्षा होती है उसी का नाम पितर कहलाया गया है।

इन पञ्चमहायज्ञों को करने वाला यजमान अपने गृह को सुन्दर, पितृ याज्ञी, देवयागी, विचित्रयागी बना संसार सागर से पार होता है। देवता और यज्ञ हमें यही शिक्षा देते हैं कि मानव बनों, जैसे वृक्ष फल आने पर अपने में नम्रः (झुक) हो जाता है। इसी प्रकार धर्म और याज्ञिक नम्रः हो जाता है। जो यजमान का फल होता है। पदार्थ विज्ञान को न जानने वाला यज्ञ को पाखण्ड उच्चारण करता है। परन्तु पाखण्ड की मीमांसा नहीं जानता। पाखण्डी उस मानव को कहेंगे जो अपने जीवन को अन्धकार में, अज्ञान में ले जाता है।

**लेख- ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी के प्रवचनों से संग्रहीत है।**

**आर्यावर्त केसरी**

**आप ऐसे भी दे सकते हैं हमें सहयोग**

1. आर्यावर्त केसरी की वार्षिक सदस्यता रु0 100/-, आजीवन सदस्यता रु0 1100/- अथवा संरक्षक सदस्यता रु0 3100/- की सात्विक सहयोग राशि भेजकर।
2. अपने परिजनों, इष्ट मित्रों एवं शुभचिन्तकों को वार्षिक या आजीवन सदस्य बनाकर या उन्हें इस दिशा में प्रेरित करके।
3. किसी महानुभाव, संस्था या संगठन के लिए उसकी सदस्यता राशि स्वयं अपनी ओर से भेजकर।
4. किसी विशेष पर्व, उत्सव, उपलब्धि, जन्मदिवस या वैवाहिक वर्षगाँठ आदि पर अपनी शुभकामनाओं का विज्ञापन देकर।
5. अपने प्रतिष्ठान या संस्थान का विज्ञापन देकर।
6. अपने संस्थान, ट्रस्ट या संगठन के स्थापना दिवस, वार्षिक महोत्सव आदि पर केसरी में विशेष परिशिष्ट का प्रकाशन कराकर।
7. अपने आलेख, विचार, प्रतिक्रिया व संगठन के समाचार भेजकर।
8. आर्यावर्त केसरी के प्रतिनिधि बनकर अथवा किसी भी अन्य रूप में, जैसा आप उचित समझें। आर्यावर्त केसरी को अपना अमूल्य सहयोग दे सकते हैं।

कोटिशः धन्यवाद सहित,
-डॉ. अशोक कुमार आर्य, प्रधान सम्पादक

## कांग्रेस स्थापना दिवस

### १२८वीं वर्षगांठ (२८.१२.२०१३)

- यह देश की सबसे पुरानी पार्टी है और इसकी शाखाएं देश के सभी 28 राज्यों तथा 7 केन्द्र शासित क्षेत्रों में हैं।
- 1920 से यह पार्टी गांधी जी द्वारा चलाई जाती थी जबकि वे इसके सदस्य भी नहीं बने थे।
- गांधी एण्ड कम्पनी ने तुष्टीकरण करके पूरा जोर लगाया कि देश विभाजित न हो किन्तु वे असफल रहे।
- 14 अगस्त 1947 को 3¼ लाख वर्गमील भूमि पश्चिमी पाकिस्तान तथा पूर्वी पाकिस्तान को देने के बाद भी गांधी एण्ड कम्पनी ने साम्प्रदायिक एकता, शान्ति, सद्भाव, भाईचारा का नारा नहीं छोड़ा और इसे खंडित भारत में बोल-बोलकर देश को खिचड़ी राष्ट्र बना दिया।
- देश विभाजन के दोषियों को धारा-29 व 30 में विशेषाधिकार देकर पुरस्कृत कर दिया।
- हिन्दू को संविधान में देश के मूल निवासी। बहुसंख्यक को सरकारी मान्यता भी नहीं दी।
- खंडित भारत में कांग्रेस विभाजित हुई। अनेकों कांग्रेसियों ने राज्य स्तर की क्षेत्रीय पार्टियां बना लीं फिर भी क्षेत्रीय पार्टियां बाहर से कांग्रेस का साथ देती हैं।
- हिन्दू का प्रतिशत 88 से घटकर 81 रह गया है किन्तु कांग्रेस व क्षेत्रीय पार्टियों को कोई चिन्ता नहीं है।

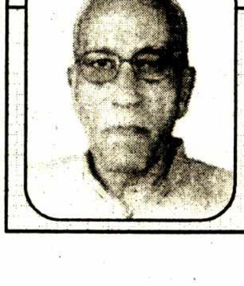

इन्द्रदेव गुलाटी
-सावरकरवाद प्रचार सभा
२६, के०पी० रोड, बुलन्दशहर (उ०प्र०)
मोबा. : 08958778443

# राष्ट्र की रक्षा कौन करेगा?

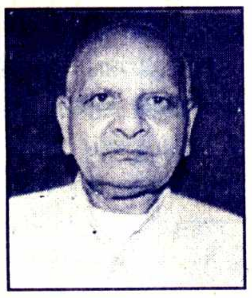

देवराज आर्यमित्र, नई दिल्ली

मैं आर्यसमाज के वार्षिक उत्सवों में जाता रहता हूँ। वहाँ प्रायः राष्ट्ररक्षा सम्मेलन के कार्यक्रम होते रहते हैं। आमन्त्रित विद्वानवक्ता और नेता अपनी ओजस्वी भाषा में जली-कटी बातें सुनाकर चले जाते हैं। हम श्रोतागण सुनकर अपने घर आ जाते हैं। परन्तु कोई परिवर्तन नज़र नहीं आता; वही ढाक के तीन पात दिखाई देते हैं। आर्यसमाज के अधिकारी उत्सवों का समापन करके सुख की सांस लेते हैं। 'आर्यसमाज अमर रहे' वेद की ज्योति जलती रहे आदि, जयघोष लगाकर टाँय-टाँय फिस्स होकर रह जाती है।

आर्यो, यदि राष्ट्र की रक्षा करना चाहते हो, कृण्वन्तो विश्वार्यम् के स्वप्न को साकार करना चाहते हो तो पहले चरित्र का निर्माण करना होगा। अपना आचरण शुद्ध सात्विक बनाना होगा। जो कुछ हम कहें, उसे करके दिखायें। यह तब सम्भव होगा जब हम भौतिकवाद की चकाचौंध से निकलकर, मौजमस्ती की दुनिया को छोड़कर पं.लेखराम और पं. गुरुदत्त की तरह बनकर प्रचार कार्य करेंगे। यह काम अपने जीवन और परिवार से शुरु करके आगे बढ़ना होगा।

आज मैं देखता हूँ, आर्य- समाजी लचकदार बने हुये हैं। आर्यसमाज के नियमों-सिद्धान्तों की उपेक्षा करके अपनी मनमर्जी करते हैं। जैसे मोटी बात है, अयोग्य आचरणहीन व्यक्ति को भारी चंदा देने के कारण आर्यसमाज का सदस्य बना लेते हैं। दो वर्ष बाद वही आदमी कार्यकारिणी में आकर अधिकारी बन जाता है। फिर अपने कारनामों से आर्य संस्था को धूमिल करता है। जब हम पूछते हैं कि सिद्धान्तों के विरुद्ध कार्य क्यों करते हो? तब कहते हैं कोई बात नहीं, क्या फर्क पड़ता है आर्यसमाज की संख्या बढ़ानी चाहिए। इस प्रकार आर्यसमाज में कूड़ा कर्कट जमा हो रहा है। आज हमारे पास यानी आर्यसमाज के पास धन भी है, शक्ति है, भवन भी है, परन्तु चरित्र की कमी है। इसलिए पतन हो रहा है। प्रदर्शन खूब हो रहा है। सैकड़ों हवन कुण्डों में एक साथ यज्ञ हो रहा है। भजन उपदेश हो रहा है परन्तु प्रभाव कुछ नहीं हो रहा है। लंगर खाओ और मौज उड़ाओ। इसका एकमात्र कारण है कि त्याग भावना से काम नहीं हो रहा है। लोकैषणा, वित्तैषणा, पुत्रैषणा के वशीभूत होकर व्याकुल हो रहे हैं। हम सुनते हैं वो भी समय था जब आर्यसमाज को ऊँचा उठाने के लिए लोगों ने अपने घर उजाड़ दिये। आज क्या हो रहा है? आज अपना घर बनाने के लिए आर्यसमाज को उजाड़ने में लगे हुये हैं। पद प्राप्त करने के लिए क्यों लड़ते हो? क्या बिना पद के सेवा प्रचार कार्य नहीं कर सकते? आर्यसमाज का प्रचार करने के लिए पद प्राप्त करने की कोई आवश्यकता नहीं है। बताओ! आर्यजगत् में आज कितने ऐसे उपदेशक हैं जिनको दक्षिणा का लोभ लालच नहीं है। मैं देखता हूँ, एक मामूली भजन गायक ऊट-पटांग बात सुनाकर मोटी दिहाड़ी बनाने के चक्कर में रहता है।

राष्ट्र रक्षा के लिए शिक्षा पद्धति को भी बदलना होगा। इंग्लिश मीडियम के पब्लिक स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चे देशभक्त नहीं बन रहे हैं। यह तो विदेशों में जाकर धन कमाने के लिए तैयार किये जा रहे हैं। भारतीय संस्कृति की धज्जियाँ उड़ाकर पश्चिम की सभ्यता को अपना रहे हैं। आर्यसमाज में आनेवाले एक सज्जन के बच्चे से पूछा, क्या प्रातः अपने माता-पिता को नमस्ते करते हो?, उत्तर मिला, हम गुडमार्निंग करते हैं। इनको हिन्दी की गिनती नहीं आतीं। लड़कियाँ मिस इण्डिया या मिस वर्ल्ड बनने जा रही हैं। उनके पहनावे को देखकर हमें शर्म आती है। आर्यसमाज के लोगों बताओ! तुम्हारे घर में क्या हो रहा है? कैसे होगी राष्ट्र की रक्षा?

## आयुष्मान् भव

(दीर्घ आयु प्राप्त करो)

**इस स्तंभ में स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती 'वेदभिक्षु' द्वारा लिखित पुस्तक 'आयुष्मान् भव' में संग्रहीत वेदमंत्र अर्थ सहित प्रस्तुत किये जा रहे हैं।**

**(३४)**

**निःकृष्टता से बचें**

**इमं जीवेभ्यः परिधिं दधामि मैषां नु गादपरो अर्थमेतम्।**
**शतं जीवन्तु शरदः पुरूचीः अन्तर्मृत्युं दधतां पर्वतेन।।**

*(ऋग्वेद, १०/१८/४)*

**पदार्थ** :- (इमं जीवेभ्यः) इन जीवन वालों के लिए, (परिधिं) परिधि अर्थात मर्यादा, (दधामि) देता हूँ या बनाता हूँ, (मा+एषा) नहीं इन जीवन वालों में कोई भी, (नु+गात्+अपरः) न+ऊः = निश्चय से नहीं, निःकृष्ट होकर त्यागें, (अर्थ+एतम्) इस जीवन रूपी धन को। (शतं-जीवन्तु) सौ वर्षों तक जीवें, (शरदः) शताधिक तक, (पुरुचिः) या इससे भी अधिक समय तक भी, (अन्तः+मृत्युं) भीतरी मृत्यु को (दधतां) स्थापित करें, (पर्वतेन) पर्वत के द्वारा।

**भाव** :- मानव आयुष्य मर्यादा १२० वर्षो तक की परमेश्वर ने की है। मनुष्य नीच बनकर इस आयु रूपी महान धन को ऐसे ही व्यर्थ न गंवा बैठें। नीच आचरणों से आयु कम होती है। १०० वर्षों या इससे भी अधिक आयु का प्रसन्नता से मनुष्य उपभोग करें। मृत्यु को अपने सदाचार एवं पुरुषार्थ रूपी पर्वत के भीतर दबाकर रखें। आदर्श आचरण के लिए योगाभ्यास परम आवश्यक समझें।

**(३५)**

**पितृ यज्ञ (त्वष्टा)**

**आरोहतायुर्जरसं वृणाना अनुपूर्वं यतमाना यतिष्ठ।**
**इह त्वष्टा सु जनिमा सजोषा दीर्घमायुः करति जीवसे वः।।** *(ऋग्वेद, १०/१८/६)*

**पदार्थ** :- हे मानवों!, (आरोहत+आयुः+जरसं) चढ़ो-बढ़ो या प्राप्त करो आयु को, वृद्धावस्था तक, (वृणानाः) स्वीकार या वरण = चयन करते हुए, (अनुपूर्वं) पहले वालों या पूर्वजों की भाँति, (यतमानाः) यत्न करते हुए, (यतिष्ठ=सतिष्ठ) आगे बढ़ते हुए, (इह) इस संसार में, (त्वष्टा) सृजनकर्ता देव, (सु-जनिमा) उत्तम जीवन के लिए और, (सजोषाः) समान प्रीतिपूर्वक रहने के लिए, (दीर्घमायुः) लम्बी आयु (करति) करे, (जीवसे-वः) सुखी जीवन के लिए, तुम्हारी।

**भाव** :- आयुभर चढ़ना चाहिए, उतरना नहीं। उठना चाहिए, गिरना नहीं । मनुष्य चिंतन करें कि हम अपने जीवन में चढ़ रहे हैं या गिर रहे हैं। चढ़ने का तात्पर्य है- उत्तम आचार से आयु बढ़ाना और गिरने का तात्पर्य है-अनाचार से आयु कम करना। पूर्वज पितृजनों के आचरण हमारे लक्ष्य का ध्येय बनें।

**(३६)**

**सवितादि देवः**

**-सविता पश्चातात् सविता पुरस्तात् सवितोत्तरातात्सविताधरात्तात्।**
**सविता नः सुवतु सर्वतातिं सविता नो रासतां दीर्घमायुः।।**

*(ऋग्वेद, १०/३६/१४)*

**पदार्थ** :- (सविता) परमात्मा, सूर्य या ज्ञान हमें, (पश्चातात् पुरूस्तात, उत्तरातात्, अधरात्तात्) पीछे से, आगे से, ऊपर से और नीचे से, (सविता नः) सविता हमें, (सुवतु) प्रदान करें, (सर्वतातिं) सर्व सुखों को, (सविता नः रासतां) सविता हमें देवें, (दीर्घमायुः) दीर्घ आयु को।

**भाव** :- सविता= परमात्मा का सर्वत्र बोध होना। सविता= सूर्य के तेज का यथार्थ उपयोग, और सविता= ज्ञानोदय= ज्ञान रूपी सूर्य की प्राप्ति। इन सब उत्तम भावों से दीर्घ आयु प्राप्त होती है।

आर्यसमाज, बिहारीपुर, बरेली 09412372179

## काव्य जगत

### स्वामी को शत् बार नमन्

डॉ० रानी कमलेश अग्रवाल

सोता देश जगाने वाले स्वामी को शत् बार नमन्।
विजय ध्वजा फहराने वाले स्वामी को शत् बार नमन्।।
हिन्दू धर्म की आंखों से था, जग को दर्पण दिखलाया
सब के सब कितने बौने हैं, मर्म समझ में तब आया
सत्य मार्ग दर्शाने वाले स्वामी को शत् बार नमन्।
सोता देश जगाने वाले स्वामी को शत् बार नमन्।।
भारत का मस्तक ऊंचा कर, जन-जन में आह्लाद भरा
मृतप्रायः से युवा हृदय में, पांचजन्य का नाद भरा
तम को दूर भगाने वाले स्वामी को शत् बार नमन्।
सोता देश जगाने वाले स्वामी को शत् बार नमन्।।
राष्ट्र देव के महा उपासक, त्यागी और तपस्वी थे
मेधा से परिपूर्ण पुरुष थे, वाणी से ओजस्वी थे
राष्ट्रधर्म सिखलाने वाले स्वामी को शत् बार नमन्।
सोता देश जगाने वाले स्वामी को शत् बार नमन्।।
लौह से तुम गढ़े गये हो, नस-नस में इस्पात भरा
भारत विश्वगुरु होगा फिर, युवकों में यह भाव भरा
चिंगारी दहकाने वाले स्वामी को शत् बार नमन्।
सोता देश जगाने वाले स्वामी को शत् बार नमन्।।
पश्चिम में तो सूरज डूबे, क्यों पश्चिम को अपनाते
अपनी शक्ति भूल गये तुम, क्यों गैरों के गुण गाते
गौरव याद दिलाने वाले स्वामी को शत् बार नमन्।
सोता देश जगाने वाले स्वामी को शत् बार नमन्।।

-'हिमदीप' राधापुरी, हापुड़ (उ०प्र०)- 245101
मोबा०- 09837573138

### विवेक और आनन्द

डॉ० राकेश अग्रवाल

मनसा वाचा और कर्मणा जहां साथ-साथ मिल जाते हैं,
तन-मन-धन सब निर्मल होकर, सुमन सदृश खिल जाते हैं।
भर जाते हैं हृदय ओज से राष्ट्रदेव ज्योतित होते,
नर नारायण बन जाते हैं, जाति भेद मिट जाते हैं।
विस्मृत शक्ति जाग्रित होती, भर जाता सब में विश्वास,
मिट जाती है पीड़ा जग की, निर्बल भी मुस्काते हैं।
शिथिल पड़े जीवन में होता, शक्ति का संचार पुनः
जगता है तब देश नींद से शब्द-शब्द शंख बन जाते हैं।
भाव वीरता का जगता है जन-जन के अन्तर्मन में,
चीर के सीना तम का जुगनू सूरज सा बन जाते हैं।
भारत मां की रज चन्दन, बनती माथे की शोभा,
कर्मयोग की सिद्धि से सब लक्ष्य स्वयं पा जाते हैं।

-'हिमदीप' राधापुरी, हापुड़ (उ०प्र०)- 245101
मोबा. : 09837183138

### चिन्तन

प्रकाश प्रजापति

नेताओं की सरकार सरकारी नेता सब
मिलजुल कर लोकतंत्र को हैं खा रहे
कुछ खाते नेता और तंत्र सरकारी कुछ
लेते ना डकार प्रजातंत्र को पचा रहे
पूंजीपति ठेकेदार और व्यापारी भी
सब मिल बांट कर लूटतंत्र मचा रहे
बाकी सब खाली पेट पेल रहे जिंदगी को
कोस रहे संविधान भीड़तंत्र सजा रहे

-सुबोध नगर, अमरोहा

www.thearyasamaj.org



# सामाजिक सुधारों के अग्रदूत थे महर्षि दयानन्द

डीएवी की प्राचार्या को सम्मानित करते अर्जुन देव चड्ढा व अन्य

**कोटा।** महर्षि दयानन्द सामाजिक सुधारों के अग्रदूत थे। उन्होंने समाज से अंधविश्वास, पाखण्ड दूर किया। यह बात वैदिक विद्वान आचार्य अग्निमित्र ने डीएवी पब्लिक स्कूल गढ़ेपान कोटा में आयोजित 'हमारे प्रेरणा स्रोत स्वामी दयानन्द' विषय पर आयोजित व्याख्यान में कही। उन्होंने कहा कि 19 शताब्दी में देश परतन्त्र था तथा समाज में घनघोर अशिक्षा व अंधविश्वास व्याप्त था। स्वामी दयानन्द ने सर्वप्रथम समाज में फैली कुरीतियों, बुराईयों व पाखण्डों को दूर करने का कार्य किया, इसलिए वे हमारे प्रेरणा स्रोत हैं। कार्यक्रम में जिला सभा के प्रधान अर्जुन देव चड्ढा ने कहा कि सत्य के प्रकाश के लिए स्वामी दयानन्द ने 'सत्यार्थ प्रकाश' नामक अमर ग्रन्थ लिखा। आर्यसमाज के छठे नियम को संसार के उपकार से जोड़ा गया है। इसलिए जिला सभा के द्वारा समाज सेवा के अनेक कार्य किए जाते हैं।

आर्य विद्वान रामप्रसाद याज्ञिक ने अपने उद्बोधन में कहा कि जो मार्ग स्वामी दयानन्द सरस्वती ने बतलाया है आर्यसमाज उन्हीं आदर्शों को अपना रहा है। उन्होंने स्टूडेन्ट शब्द की व्याख्या करते हुए छात्रों को श्रेष्ठ विद्यार्थी बनने की प्रेरणा दी। डी.ए.वी. की प्राचार्या अंजू उतरेजा ने धन्यवाद देते हुए कहा कि छात्र स्वामी जी के आदर्शों को अपनाएं और जीवन को वैदिक संस्कारों से ओतप्रोत करें। हमारा लक्ष्य है संस्कारयुक्त जीवन बनाना।

कार्यक्रम का प्रारम्भ छात्रों द्वारा ईश्वर स्तुति प्रार्थना, उपासना के मंत्रों के भावार्थ सहित सामूहिक पाठ के साथ हुआ।। जिला आर्य सभा द्वारा डी.ए.वी. की प्राचार्या को स्वामी दयानन्द सरस्वती के जीवन पर आधारित फिल्म की हिन्दी और अंग्रेजी की डी.वी.डी. भेंट की गई।

॥ ओ३म् ॥

२४वीं पुण्यतिथि पर

हार्दिक श्रद्धांजलि

स्व. नन्दराम रुस्तगी

अवतरण- १ जुलाई १९३३

अवसान- २२ दिसम्बर १९८९

आर्यावर्त केसरी परिवार

आर्यसमाज नेमदारगंज द्वारा आयोजित समारोह के विभिन्न दृश्य- केसरी।

# सत्यार्थ प्रकाश सम्मेलन एवं राष्ट्र रक्षा महायज्ञ सम्पन्न

सत्यदेव प्रसाद आर्य 'मरुत'
नेमदारगंज (नवादा) बिहार

आर्यसमाज नेमदार गंज द्वारा 21 से 24 नवम्बर तक डी.ए.वी. जोन-2 एवं मगध प्रमण्डलीय आर्य सभा के संयुक्त तत्वावधान में हर्षोल्लास के साथ क्षेत्रीय जनता के सहयोग एवं आगत अतिथियों, विद्वानों के अथक प्रयास से सत्यार्थ प्रकाश सम्मेलन एवं राष्ट्र रक्षा महायज्ञ सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य डॉ. सोमदेव शास्त्री (मुम्बई), पं. वेद प्रकाश श्रोत्रिय (दिल्ली), पं. दिनेशदत्त भजनोपदेशक (दिल्ली), बहन रंजना तिवारी (कानपुर), पं. दयानन्द सत्यार्थी (समस्तीपुर), पं. अमर देव भजनीक ने अपने भजनों व प्रवचनों से श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध कर दिया। समारोह में महर्षि दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष अशोक आर्य (उदयपुर), सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली के मंत्री विनय आर्य, बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान गंगा प्रसाद, मंत्री रमेन्द्र कुमार गुप्ता, कोषाध्यक्ष सत्यदेव गुप्ता, आर्य प्रतिनिधि उपसभा बिहार के प्रधान यू.एस. प्रसाद, निदेशक डी.ए.वी. जोन-2 गया तथा डी.ए.वी. के विभिन्न स्कूलों के प्राचार्यगण, कानपुर राजार्य सभा के रघुराज शास्त्री, नवादा के चिकित्सक डॉ. मनोज कुमार एवं डॉ. पिन्की बरनवाल आदि मुख्य रूप से उपस्थित थे।

प्रमण्डलीय सभा के सभी पदाधिकारी, डी.ए.वी. के धर्माधिकारी, नवादा जिला आर्य सभा के अधिकारियों, क्षेत्रीय विशिष्ठ गणमान्य सज्जनों, बिहार के 39 जिलों से पधारे प्रतिनिधिगण, नेपाल से आये भद्र पुरुषों एवं महिलाओं का सम्मान पुष्पमाला, शॉल एवं सत्यार्थ प्रकाश से किया गया। भोजनालय में सम्मानीय अतिथियों की संख्या छः सौ प्रति दिवस से अधिक आंकी गई। कार्यक्रम का कुशल संचालन आर्य विद्वान व कर्मठ नवयुवक संजय सत्यार्थी ने किया।

आर्यावर्त केसरी

संरक्षक
श्रीराम गुप्ता
प्रबन्ध सम्पादक- सुमन कुमार 'वैदिक',
विनय प्रकाश आर्य, शिव कुमार आर्य
सह सम्पादक- पं. चन्द्रपाल 'यात्री'
समाचार सम्पादक- सत्यपाल मिश्र,
यतीन्द्र विद्यालंकार, रवित विश्नोई,
डॉ. ब्रजेश चौहान
मुद्रण- फरमूद सिद्दीकी,
इशरत अली
साहित्य सम्पादक- डॉ. बीना रुस्तगी
प्रधान सम्पादक
डॉ. अशोक कुमार आर्य

डॉ. अशोक कुमार आर्य-प्रकाशक, मुद्रक, व स्वामी द्वारा स्टार प्रिंटिंग प्रेस, अमरोहा से मुद्रित व कार्यालय-
आर्यावर्त केसरी
मुरादाबादी गेट, अमरोहा, जेपी नगर
उ.प्र. (भारत) -२४४२२१
से प्रकाशित एवम् प्रसारित।
☎:05922-262033,
9412139333 फैक्सः 262665
डॉ. अशोक कुमार आर्य
प्रधान सम्पादक
e-mai :
aryawart_kesari@rediffmail.com
aryawartkesari@gmail.com